॥ श्री गोभ्यः नमः॥

हिन्दी मासिक

कामधेनु-कल्याण

मार्च-2012

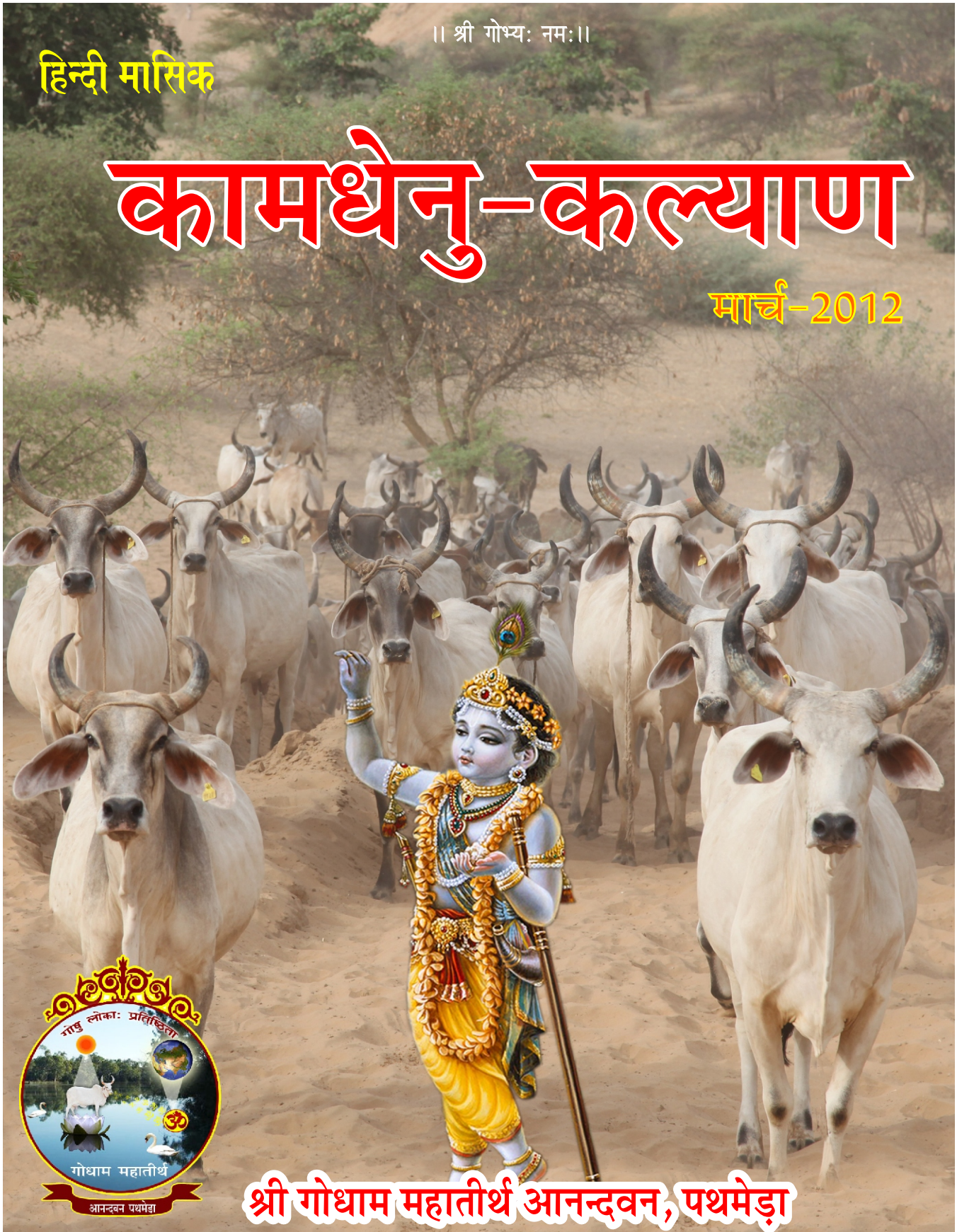

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन, पथमेड़ा

वर्षः 6

Web. www. Pathmedagodarshan.org
Email: k.k.p.pathmeda@gmail.com

अंक :9

सुरभि उवाच

प्रियपुत्रों,

स्नेह पूर्ण शुभआशीष।

मेरे गव्यों का सेवन कर आरोग्यता और सात्विकता का प्रसाद जीवन में पाते रहो।इस समय गोप्रेमी भक्तों व सन्तों के साथ मैं मेरे गोपाल की लीला भूमि और मेरी विचरण भूमि में निवासकर रही हूँ।प्रतिदिन प्रात: काल साक्षात् कृष्ण-बलराम सभी सन्तों को साथ लेकर मेरा पूजन करते हैं और निकल पड़ते है चौरासी कोस ब्रज भूमि में गोचारण लीला करने को।द्वापरयुग का यह दृश्य हजारों वर्षो बाद मेरे सन्तों के संकल्प से एक बार पुन:प्रकट हुआ है।

ब्रजवासी जो सदा से गोपालक रहे हैं,ना जाने उन्हें क्या हुआ कि उनका आकर्षण दूध के लोभ के कारण तमोगुण जीव भैंस और संकरित पशु के प्रति अधिक हो गया है। मेरे सन्तों ने यह प्रयास किया है कि द्वापर का वह कन्हैया के गोचरण लीला का दृश्य ब्रजवासी देखें और उन्हें फिर से अपना गोमय अतित याद आवे।पुन: गोवंश की सेवा में संलग्न हो जावें। मेरे हजारों पुत्र इस समय मेरे साथ ''ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा''कर रहे हैं। वे सभी प्रतिदिन मेरे पीछे-पीछे पैदल चलते हैं। मेरे गव्यों का सेवन करते हैं, नाम संकीर्तन और सन्तों की वाणी श्रवण कर अपने जीवन को मंगलमय और अपने अन्त:करण को शुद्ध बना रहे हैं। मेरे लिये समय लगाकर श्रम करने वाले इन सभी मेरे पुत्रों को मैं निष्पाप बनाकर इनके जीवन को सात्विकता और प्रभुभक्ति से भरदूँगी।

तुम्हें क्या बताऊँ, इस ब्रजभूमि पर परमब्रह्मश्रीकृष्ण ने गोपाल बनकर मेरी सेवा व गोचारण की परम्परा को आगे बढ़ाया उसी ब्रजभूमि में मेरी उपेक्षा व मेरे वंश की कमी को देखकर हृदय में अपार पीड़ा हो रही है। ब्रजवासियों के घर व देवालयों,सभी में समान स्थिति है। सिर्फ नाम मात्र के ब्रजवासी घर व देवालय में सेवा कर सात्विकता व कृष्ण प्रेम का प्रसाद ले रहे हैं। मैं क्या करूँ तुम ही बताओ?यदि वे मेरे गव्यों का सेवन करें, मेरे वंश की सेवा करें तो मैं इनका जीवन धन-धान्य व भक्ति-प्रेम से परिपूर्ण कर दूँ और क्या बताऊँ मैं स्वयं यह बातउनको नहीं समझा सकती, हाँ तुम मेरे इन गो-गव्यों की महिमा ब्रज में और सम्पूर्ण जगत में प्रचारित करो।तुम जैसे गोभक्त संत मेरे गो-गव्यों का व मेरी महिमा का प्रचार करेंगे तो मैं निश्चित बता रही हूँ किउनके जीवन की तमाम व्यवस्था मैं उठालुँगी।मेरा गोपाल उनका साथी बनकर सहायता करेगा। तुम आगे आओ !तुम्हारे सम्पन्न मित्रों को सेवा हेतु प्रेरित करो ! संतोंके चरणों में निवेदन करो ! मैं और मेरा गोपाल सदा तुम्हारे साथ हैं !कहने को बहुत कुछ मन में आ रहा है, पर इस बार इतना ही।

तुम्हारी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम्।।
यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्षः6 dke/ku&dY;k.k अंकः9

वि.सं. फाल्गुन शुक्ल पक्ष 2068 मार्च – 2012

अनुक्रमणिका

1. सम्पादकीय 2
2. साधक संजिवनी ❖ स्वधर्म सम्बन्धी मार्मिक बात–1 4
3. श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद ❖ परम भागवत **गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी** महाराज के प्रवचन (गोवत्सव पाठशाला– 2011) 5
4. गोभागवत कथा–2010 ❖ परम पूज्य द्वाराचार्य **श्रीमंहत श्रीराजेन्द्रदासजी** महाराज 10
5. बालक अंक ❖ गर्भवती माताके आहार, आचार–विचार, संग, स्वाध्याय आदिका गर्भपर प्रभाव 15
6. संत नामदेव की गौ निष्ठा 17
7. श्री कृष्ण और पुजारी का संवाद 20
8. दानमहिमा अंक ❖ दान–एक विहंगम दृष्टि 23
9. गोघृत माहात्मय ❖ पं. गंगाधरजी पाठक 26
10. संस्था समाचार ❖ परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के फरवरी माह प्रवास का संक्षिप्त विवरण :–❖ परम श्रद्धेय श्री स्वामीजी महाराज के मार्च माह के संभावित संक्षिप्त प्रवासः–❖ 'श्री ब्रज चौरासी कोस गो–यात्रा'' अदभुत, अनुपम एवं अभूतपूर्व स्वरूप में जारी 28
12. व्रत पर्वोत्सव अंक ❖ शीतलाष्टमी 33
13. कविता 34

हे कृष्ण! गोकुलसखे! प्रिय गोपन्धों! नो वीक्षसे कथमिमां निजपुण्यभूमिम्।।
गोलीलया कचिदियं मधुरा धरासीत् सैवास्ति गोवध कलकंयुताऽधुना हो।।

हे कृष्ण! गोवंश के हितैषी! गोपबन्धु! क्या आप भी इस पुण्य भूमि को नहीं देख रहे हैं। जो धरा किसी समय आपकी गो लीलाओं से मधुर प्रतीत होती थी, वही आज गोवध से कलंकित हो गई है।

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज

Web. www.pathmedagodarshan.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

lEikndh; irk
श्रीगोधाम महातीर्थ आनन्दवन–पथमेड़ा,
त.–सांचोर, जि.–जालोर (राज.) 343041
Ph.02979-287102-09
Tel. Fax. 02979-287122

प्रबन्ध व कार्यकारी सम्पादक
पूनम राजपुरोहित ''मानवताधर्मी''
Mob.9414154706

lEiknd
स्वामी ज्ञानानन्द

eY;&10 #i;s

आजीवन सदस्यता शुल्क–1100 रुपये मात्र

स्वधर्म सम्बन्धी मार्मिक बात-1

साभारः- साधक संजीवनी

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।।

(गीता 3/35)

अर्थ :- अच्छी तरह आचरण में लाये हुए दूसरे के धर्म से गुणों की कमी वाला अपना धर्म श्रेष्ठ है। अपने धर्म में तो मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है।

व्याख्या :- अन्य वर्ण, आश्रम आदि का धर्म (कर्तव्य) बाहर से देखने में गुणसम्पन्न हो, उसके पालन में भी सुगमता हो, पालन करने में मन भी लगता हो, धन-वैभव, सुख-सुविधा, मान-बड़ाई आदि भी मिलती हो और जीवनभर सुख-आराम से भी रह सकते हों, तो भी उस परधर्म का पालन अपने लिये विहित न होने से परिणाम में भय-(दुःख-) को देनेवाला है। इसके विपरीत अपने वर्ण, आश्रम आदि का धर्म बाहर से देखने में गुणों की कमी वाला हो, उसके पालन में भी कठिनाई हो, पालन करने में मन भी न लगता हो, धन-वैभव, सुख-सुविधा, मान-बड़ाई आदि भी न मिलती हो और उसका पालन करने में जीवनभर कष्ट भी सहना पड़ता हो, तो भी उस स्वधर्म का निष्कामभाव से पालन करना परिणाम में कल्याण करने वाला है। इसलिये मनुष्य को किसी भी स्थिति में अपने धर्म का त्याग नहीं करना चाहिये, प्रत्युत निष्काम, निर्मम और अनासक्त होकर स्वधर्म का ही पालन करना चाहिये।

मनुष्य के लिये स्वधर्म का पालन स्वाभाविक है, सहज है। मनुष्य का जन्म कर्मों के अनुसार होता है और जन्म के अनुसार भगवान ने कर्म नियत किये हैं, (गीता-१८/४१)। अतः अपने-अपने कर्मों का पालन करने से मनुष्य कर्मबन्धन से मुक्त हो जाता है अर्थात् उसका कल्याण हो जाता है (गीता-१८/४५)। अतः दोषयुक्त दीखने पर भी नियत कर्म अर्थात् स्वधर्म का त्याग नहीं करना चाहिये (गीता-१८/४८)।

अर्जुन युद्ध करने की अपेक्षा भिक्षा का अन्न खाकर जीवननिर्वाह करने को श्रेष्ठ समझते हैं (गीता-२/५)। परन्तु यहाँ भगवान अर्जुन को मानो यह समझाते हैं कि भिक्षा के अन्न से जीवननिर्वाह करना भिक्षुक के लिये स्वधर्म होते हुए भी तेरे लिये परधर्म है; क्योंकि तू गृहस्थ क्षत्रिय है, भिक्षुक नहीं। पहले अध्याय में भी जब अर्जुन ने कहा कि युद्ध करने से पाप ही लगेगा- **पापमेवाश्रयेत्** (गीता-१/३६), तब भी भगवान ने कहा कि धर्ममय युद्ध न करने से तू सवधर्म और कीर्ति को खोकर पाप को प्राप्त होगा (गीता-२/३३)। फिर भगवान ने बताया कि जय-पराजय, लाभ-हानि और सुख-दुःख को समान समझकर युद्ध करने से अर्थात् राग-द्वेष से रहित होकर अपने कर्तव्य-(स्वधर्म-) का पालन करने से पाप नहीं लगता (गीता-२/३८)। आगे गीता-१८/४७ में भी भगवान ने यही बात कही है कि स्वभावनियत स्वधर्मरूप कर्तव्य को करता हुआ मनुष्य पाप को प्राप्त नहीं होता। तात्पर्य यह है कि स्वधर्म में राग-द्वेष रहने से ही पाप लगता है, अन्यथा नहीं। राग-द्वेष से रहित होकर स्वधर्म का भलीभाँति आचरण करने से समता-(योग-) का अनुभव होता है और समता का अनुभव होने से दुःखों का नाश हो जाता है(गीता-६/२३) इसलिये भगवान बार-बार अर्जुन को राग-द्वेष से रहित होकर युद्धरूप स्वधर्म का पालन करने पर जोर देते हैं।...*शेष अगले अंक में*

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(टेपांकित वाणी का संकलन)

(गोऋषि परम श्रद्धेय स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

.....पिछले अंक से आगे

आज ऐसी परिस्थितियाँ हैं कि अगर बिना कुछ दिये दूध लेना चाहो तो सम्भव ही नहीं लगता। सारी व्यवस्थाएँ अर्थ प्रधान हैं। कितना लगता है और कितना मिलता है, सारा ध्यान ही इस ओर रहता है। यहाँ तक की अन्यथा तो नहीं लेंगे, कई तरह के धार्मिक आयोजनों में भी यही लक्ष्य रहता है कि खर्चा कितना होगा और आमदनी कितनी होगी। जिसमें खर्चा कम हो और आमदनी अधिक हो वो उपाय अपनाते हैं। गायें जो लोगों ने छोड़ी है, आज के किसान गाय से दूर हुए उसके पीछे कारण अर्थ है। गो-गव्यों की महत्ता वर्तमान की आसुरी सत्ताएँ नहीं समझ सकती, नहीं समझ पायी। ऐसी पवित्र वस्तुओं को समझने का उनका लक्ष्य है ही नहीं। इसलिये वे गव्यों की महत्ता न समझने के कारण उनका उचित मूल्य नहीं दे पाते।

गाय के दूध का मूल्य सरकारी डेयरियों में फैट के आधार पर तय किया जाता है। भैंस के दूध में फैट अधिक होने से गाय के दूध का मूल्य उससे कम मिलता है। भैंस के दूध में फैट ज्यादा होता है और गाय के दूध में कम होता है पर भैंस का दूध पिलाने से राष्ट्रवासियों की क्या दुर्दशा होगी उस पर उनका कोई ध्यान नहीं जाता। हाँ इससे मोटे हो जायोगे, चर्बी बढ़ जायेगी इस पर तो ध्यान जाता है पर उसको पीने से मन कैसा होगा, भाव कैसा होगा इस पर कोई विचार नहीं। कालांतर में मोटे तो हो जायेंगे पर उससे रक्त संचरण का क्या होगा, प्राण संचरण कैसे होंगे यह तो सोच ही नहीं रहे हैं? भैंस के दूध में वसा अधिक है और वह वसा तामसी है। तामसी होने से वह हमारी प्राण वाहिनी और रक्त वाहिनी नसों में जम जाता है। बहुत सारी कफजन्य और वातजन्य बीमारियों भैंस का दूध, दही, घी खाने से होती है। जो भैंस का दूध, दही, घी खाते हैं उनको अच्छी तरह से पता है कि ४० और ५० वर्ष की आयु के बीच में उनके जोड़े दुखने आ जाते हैं और किसी के सिर, छाती, पेट दुखने आ जाते हैं। स्वाभाविक है वो तो होगा ही होगा। यह पदार्थ ही ऐसा ही है। बुद्धि तो खराब होती ही है, पर साथ में तन भी खराब हो जाता है।

हम सोचते हैं कि तन अच्छा हो जायेगा। अच्छा होता तो फिर भगवान व बलरामजी उन दोनों (मुष्टिक-चाणुर) को पछाड़ते नहीं। उनको बहुत खिलाया पिलाया था मक्खन, घी आदि पर सब भैंसों का, वे बहुत मोटे थे। ऐसे फेंके घूमाकर, उनका इतना वजन कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते और भगवान ने तो हाथी को भी फेंक दिया। गोदुग्ध पान करने वाले में सात्विक बल होता है और सात्विक बल की कोई सीमा नहीं है। हर समय उसका प्रयोग नहीं होता है जहाँ उसकी आवश्यकता होती है तब वह सात्विक बल जगता है। वैसे तो वह हर समय विद्यमान रहता है पर आवश्यकता होती है तभी प्रकट होता है और यह जो सात्विक बल है वो गोगव्यों से मिलता है। गव्यों में यह शक्ति है। इतना उसमें सात्विक तेजस्व है कि दूध या घी हो अथवा गोमूत्र हो तत्काल सभी नसों में प्राणों के साथ

और रक्त के साथ मिलकर अच्छी गति देगा। कोई अवरोध होगा तो भी नष्ट हो जायेगा।

तो हमने अभी पूर्ण गोव्रति की बात कही। अन्न भी आपको गोबर-गोमूत्र से उत्पादित मिले। फल-सब्जी भी आपको वो मिले, दालें भी वो मिले। जब तक आपको वैसा भोजन नहीं मिल रहा है और घी, दूध जब तक पूरा गाय का नहीं मिल रहा है तब तक आप कम से कम यह तो व्रत रखें कि २४ घण्टे में एक बार तो ५० ग्राम गोमूत्र, २० ग्राम घी, २५० ग्रम दही, दूध या छाछ इनमें से कोई एक चीज तो लेना है। अन्यथा क्या होगा? अगर आठ पहर में हम एक बार भी पंचगव्य न ले पायेंगे तो हमारे अन्दर सूक्ष्म और स्थूल शरीर के अन्दर उन्हें आसुरी शक्ति कहें या रोगाणु, किटाणु कहें, क्या कहते हो हमें पता नहीं, पर वो प्रवेश कर जायेंगे। प्रवेश करने के बाद उनका शमन नहीं होगा। वो पंचगव्य है वो आठ पहर में जो इस तरह से बाहर से विषाणु, किटाणु हवा, जल के द्वारा हमारे अन्दर प्रवेश करते हैं उन सबको नष्ट कर देता है उनका शमन कर देता है। निरन्तर आठ पहर में एक बार तो लेना ही है। तो वे विषाणु और रोगाणु आपके तन-मन पर दुष्प्रभाव नहीं डाल पायेंगे। वो निर्जीव रहेंगे और निरन्तर लोगे तो नष्ट भी हो जायेगे। अब वो आते रहते हैं। इसलिये गव्यों को निरन्तर लेने की आवश्यकता है।

हम तो सोचते हैं कि भोजन, जल, हवा आदि में विषाणु-रोगाणु आना अगर हम बन्द कर दें तो। तो उसके लिये एक विराट व्यवस्था चाहिए। व्यवस्थाएँ सत्ता के अधीन होती हैं और सत्ता इस समय आसुरों की है। आसुरी सत्ता ही है पूरी दुनिया में। एक ही सत्ता है भले ही अलग-अलग देश हो पर पूरी दुनिया में शासन करने वाली सत्ता आसुरी है। दानवी, राक्षसी और मोहिनी। यानि दानवी शक्ति के ये तीन भेद हैं- आसुरी, राक्षसी और मोहिनी। ये तीन तरह के शासक सारे संसार में हैं।

इसलिये जब तक शासन की व्यवस्था या उस तरह के शासक अर्थात् उनकी सोच, उनका चिंतन वो नहीं बदलता है तब तक हम हवा, जल, आकाश आदि को तो शुद्ध नहीं कर पायेंगे, पर व्यक्तिगत रूप से जीवन में आहार हम लेते हैं उस आहार में ठोस पदार्थ शुद्ध और पवित्र ले ही सकते हैं। जहाँ तक हवा की बात है तो हमें गाय का सान्निध्य मिले तो हवा पवित्र मिलेगी। गो के चारों ओर १५-१६ मीटर का जो आभा है उस आभा मण्डल के अन्तर्गत हम रहें या हम निवास करें तब तो हवा में आने वाले किटाणु और विषाणुओं का दुष्प्रभाव हमारे ऊपर नहीं पड़ेगा। बहुत सारी जो गोअें खड़ी हैं उनसे एक बड़ा विराट उनका तेजस बनता है। उसे चित्त शक्ति भी कह सकते हैं। चित्त शक्ति का एक पूरा आभा मण्डल बनता है। वैसे तो गोलोक तक है ही है पर यहाँ भी बहुत विराट बनता है उनके चलने से, उनके श्वास से काफी दूर-दूर तक।

एक गाय की उपस्थिति से, दस गायों की उपस्थिति से, १०० गायों, १००० गायों की उपस्थिति से कितना वायुमण्डल शुद्ध और सात्विक बनता है। वो अब आगे मापने का प्रयास करेंगे, पर बनता है और बहुत बड़े विस्तार से उनका आभा मण्डल फैलता है यह हमको पूरा विश्वास है। जब आप लोग प्रयोगशालाओं में प्रयोग करोगे तो हमारे विश्वास को और बल मिलेगा। हम जो कहते हैं उससे अधिक शक्ति उनमें है। हम तो डरते-डरते

कहते हैं कि आप सब विज्ञान के छात्र हैं और कल जाकर प्रयोग करो और बोलो कि लो! व्यासजी तो कह रहे थे, महाराज तो गोसेवा में लगे हुए हैं इसलिये वे तो वैसे ही बातें कह रहे थे बिना आधार ही। हम पढ़े लिखे आदमी नहीं हैं और हमें इतना पढ़ने का समय भी नहीं मिलता। आप पढ़े-लिखे हैं और पढ़े ही नहीं आप तकनीकी और भाषायी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं तो उसके द्वारा इस पर अनुसंधान करें। आप में तो श्रद्धा है, आस्था है, विश्वास है आप के पूर्वजों के संस्कारों से, संतों के सान्निध्य से, भगवत कृपा से, पर दूसरे बहुत सारे लोग हैं पृथ्वी पर उनको समझाने के लिए हमें प्रयोगशालाओं के द्वारा उन सभी वस्तुओं की तो महत्ता को प्रमाणित करनी पड़ेगी और वो प्रमाणित आप लोगों से ही होगी।

इन सबको हमारे जीवन में भी हम लें और साथ-साथ में प्रयोग भी करें उन्हें तकनीक के द्वारा उनमें जो तत्व अवसंधित है उसको प्रकट करें। ये बातें थी कि इस तरह से शुद्ध आहार हमें प्राप्त हो पूरा का पूरा। तो आहार के द्वारा पहले भी और गर्भ के बाहर आने के बाद भी तन-मन और मस्तिष्क का निर्माण और विस्तार होता है। आप की बुद्धि अच्छी हो, आपका मन अच्छा हो, आप का तन अच्छा हो, पवित्र हो, मांगलिक हो और स्वस्थ हो। स्वस्थ हो और मांगलिकता व पवित्रता नहीं रही तो भी कोई मतलब नहीं। ऐसे स्वस्थ लोग जिनके हृदय में मलिनता है और जिनकी बुद्धि विपरित दिशा में चलती है ऐसे लोगों से तो सृष्टि को खूब नुकसान होगा। खुद को भी होगा और सृष्टि को भी होगा। इसलिये पवित्रता मांगलिकता और सात्विकता ये तीनों चीजें साथ-साथ हो और ये तीनों गो से ही प्राप्त होती है गो के गव्यों से।

खेतों से जो हमारे पास अन्न आदि आ रहे हैं अगर खेतों को गोबर-गोमूत्र मिले तो अन्न पवित्र होगा। हमारे आरोग्य शास्त्र में और जीवन शास्त्र में, धर्मशास्त्र दोनों में यह बात कही गयी है कि इस पृथ्वी का आहार गोबर है। जैसे हमारा आहार अन्न, फल आदि है ऐसे ही पृथ्वी माता का आहार है गाय का गोबर और गोमूत्र। बाकि चीजें उसके लिए आहार नहीं नशा है। फर्टिलाईजर है यह औषधि नहीं यह नशा है। आदमी को अफीम खिला दो तो अफीम के नशे में वह खूब काम करेगा और बातें करेगा बढ़िया-बढ़िया और नशा उतरने के बाद कमजोर हो जायेगा। इसी तरह नशा ही नशा करता जायेगा, अफीम ही अफीम खाता जायेगा भोजन करेगा ही नहीं तो थोड़े दिन में रामजी राम हो जायेगा। ऐसे ही पृथ्वी को फर्टिलाईजर और कीटनाशक देते रहे और उसका मूल आहार प्राप्त नहीं हुआ तो उसका उत्पाद तो विषैला हो ही गया, उसका दूध तो जहरीला हो गया पर धीरे-धीरे पृथ्वी की उर्वरा शक्ति, पृथ्वी के अन्दर जो जीवनी शक्ति है वह भी समाप्त हो जायेगी। वैसे भी क्रियाशील रहने से जीवनी शक्ति का क्षय हो होता है मानी घटती है। तो उसमें कार्य करने के लिये नई ऊर्जा कुछ विश्राम करने से और कुछ भोजन करने से प्राप्त होती है। विश्राम करने से समष्टि प्रकृति से और भोजन आहार आदि से व्यष्टि प्रकृति से हमें पुनः जीवनी शक्ति प्राप्त होती है, कार्य करने की, विचार करने की शक्ति हमें प्राप्त होती है। तो हम निवेदन कर रहे थे कि पृथ्वी की जीवनी शक्ति भी समाप्त होगी, पृथ्वी मर जायेगी, पृथ्वी जल जायेगी जहर खा-खाकर। इसका अर्थ यह है कि पृथ्वी तो रहेगी, ये हवा, जल, सूर्य ये सब तो रहेंगे पर इनमें सत्व नहीं

होगा, जीवन नहीं होगा। हवा चल रही है पर हम घबरा रहे हैं कि इसमें ऑक्सीजन नहीं मिल रहा। अन्न होगा पर अन्न में जो जीवन होगा वो नहीं होगा। विष ही विष अर्थात् मृत्यु ही मृत्यु होगी।

हमें अपने को तो ठीक होना ही है, पर हम एक भगवद् कार्य, बहुत की महत्व के कार्य के निमित्त परस्पर मिल रहे हैं, चर्चा कर रहे हैं माने मिलना भी भगवत कार्य के सम्पादन के लिये हो रहा है। आपका, व्यासजी का, लोगों का जो मिलना है वो भगवत कार्य के लिये मिलना हो रहा है। तो हम केवल इतना समझें कि हम अगर अपना आहार विहार सुधार लेंगे तो बाकि सब तो सुधारना है ही, स्वस्थ, पवित्र होना ही है। पर और मनुष्यों को और प्राणियों को, प्रकृति को सबको स्वस्थ बनाना है, यह भगवत कार्य है। इसमें कोई किसी भी तरह का व्यक्तिगत, सामूहिक, सामाजिक या राष्ट्रीय स्वार्थ न होकर सम्पूर्ण प्राणियों का हित सामाहित है कि गाय की महिमा, गाय के गव्यों की महिमा, गव्यों की विशेषता से मानव जाति परिचित हो ऐसा प्रयास हम सबको करना। उस प्रयास की प्रेरणा भगवान ही देंगे। गोमाता ही देगी।

गाय और भगवान दो नहीं हैं एक ही है। अब यह है कि स्थूल रूप में गाय का जो स्वरूप है वो तो दर्शन हमें हो रहे हैं, सूक्ष्म रूप, चिन्मय रूप में गाय की उपस्थिति, उनका दर्शन नहीं हो रहा है, जबकि 'यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजगंमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्' वो चल और अचल दोनों में ही। चलने वाले और न चलने वाले सभी भूतों में, प्राणियों में वह गोमाता, वह भगवती पराअम्बा शक्ति व्याप्त है पर उनकी सब जगह अनुभूति नहीं होती। भगवान हमारे आपके बीच में, अपने श्वास-प्रश्वास के बीच में, संकल्प-विकल्प के बीच में सर्वत्र उपस्थिति हैं, पर उनकी उस तरह से अनुभूति नहीं होती। उनकी अनुभूति संतों के माध्यम से या भगवद् अनुग्रह से ही सम्भव है।

अपने इसका नाम पाठशाला है तो सबसे अधिक तो हमें गाय से सीखना है। सब से बड़ा मास्टर तो गाय है हमारा। गाय में तीन चीजें आप देखें। एक तो गाय हर समय सहज रहती है। आप जब प्रातः काल गोशाला में जायें तब उनके नैत्रों को देखें, वो बहुत कम पलक गिराती है, बहुत कम। अपलक, सहज। गाय के नैत्रों को देखते-देखते आपका चित्त निर्मल हो जायेगा। दूसरा वो बड़ी सावध ाान रहती है। इतनी सहज है और अगर थोड़ी सी कोई हल चल हुई तो एकदम यानि शान्त भी है और जागृत भी है। होश भी बड़ा जोरका है गोमाता में। शान्त और सावधानी, सहजता और सावधानी और तीसरा है आनन्द । गाय का दर्शन ही हमें रस प्रदान करता है, वो स्वयं रसमय। आप गाय को देखेंगे तो हर समय उनके इतनी सात्विक प्रसन्नता उनके नेत्रों में, उनके चहरे में हमें दिखती है। *धर्म जब जीवन में उतरा हो, जो व्यक्ति धर्मात्मा हो जाता है तो उसका परिचय क्या? उसका परिचय यही है कि वह सहज होगा, वह सजग होगा और वह शान्त होगा।* ये तीनों चीजें उसमें होगी।

ये तीनों चीजें हमें गाय से प्राप्त होगी। इसलिये गाय के गव्यों से व्यक्ति में एकाग्रता बढ़ती है, व्यक्ति के हृदय में रस की वृद्धि होती है, आनन्द की वृद्धि होती है और सजगता रहती है। इतनी सजगता रहती है कि एक क्षण में विपरित से विपरित परिस्थिति में भी वो निर्णय कर लेता है कि अब मुझे किस

तरफ जाना है। जगलों में गायें चरने जाती है। हिंसक जानवर उनपर आक्रमण कर लेते हैं। कई बार गोमाता का वहीं पर शरीर छूट जाता है। पर अपने वत्स को तो गाय बचाती है, शेर से भी बचाती है। शेर के साथ भी युद्ध करती है। स्वामी गुरुशरणानन्दजी महाराज कहते थे कि गाय सिंह बन जाती है। कब बन जाती है? जब अपने उस वत्स पर कोई आक्रमण करता है तब वो सिंह बन जाती है। अपने बछड़ें को बचाती है और ग्वालें को भी बचाती है।

अभी कुछ वर्षों पहले की बात है। यहाँ राईका अभी बैठे थे। सिरोही जिला के राईका गाय लेकर इधर जालोर जिले में चराने आये, किसी जागीरदार के खेत में गाय पहुँच गयी। उस जागीरदार के लड़के ने और उस जागीरदार के काम करने वाले ने उस पर आक्रमण कर दिया। कुलाहाड़ी लेकर वो आये। तो उसने अपनी लाठी से सामना किया। उतने में जागीरदार का पिता आया। वो यह बोलता हुआ ही आ रहा था कि मारो-मारो। ग्वाले ने कुल्हाड़ी को पकड़ लिया तो उसने दूसरी कुल्हाड़ी से वार किया तो वह कुल्हाड़ी उस ग्वाले के तो लगी नहीं और उसके पिता के लग गई। जिसके हाथ में कुलाहड़ी थी उसके पिताजी के सिर में लग गई। यह देख ग्वाला भी भाग गया और गायें भी उनके साथ-साथ वहाँ से भाग गई।

वो जागीरदार गांव का प्रतिष्ठित व्यक्ति था। उसने तुरन्त ही पुलिस को साथ लिया। बहुत सारे झगड़ालु लोग होते हैं उनको भी साथ ले लिया। उन सबने मिलकर ग्वालों पर आक्रमण करना चाहा। सारी गायों ने ग्वालों को घेर लिया। चारों तरफ गायें हो गई। पीठ पीछे और सींग आगे। कोई उसके निकट न आये। जैसे ही पुलिस वाले गये पकड़ने तो गायों ने कूदकर ऐसे सींग मारे कि पुलिस वाले वहाँ से भाग गये। अब रात को हमारे पास कुछ लोग आये गोधाम में। उन्होंने कहा ऐसी-ऐसी घटना हुई और पुलिस उनको पकड़ना चाहती है। बाहर वो निकल नहीं पा रहे हैं और कुछ लोग भी उनको मारने चाहते हैं। अब प्रातःकाल वहाँ कलेक्टर साहब से कार्यकर्ता की बात कराई और कहा अब इस तरह से गायें परसों से भूखी हैं। ग्वाले भी घीरे हुए हैं, तो आप वहाँ जायें, हमारे वहाँ जाने से कुछ नहीं होगा। भूखों को भोजन मिलना चाहिए तो इस प्रकार कलेक्टर साहब को समाचार करवा दिया। गायों के ग्वालों को आने-जाने के लिये न रोका जाये अगर कोई अपराधी होगा तो उसको सुपुर्द कर दिया जायेगा। जब हम वहाँ पहुँचे उससे पहले प्रशासन ने वो सब करवा लिया। ग्वालों ने जब हमको घटनाएँ बतानी शुरू की तो हमें पूरा पता लगा। अभी ४ साल हो गये इस घटना को।

तो गाय अपने सेवक की भी रक्षा करती है। यह तो स्थूल रूप से और अप्रत्यक्ष रूप से तो अभी अपने १५-२० सालों में अनेक सारे अनुभव हैं वो लिख ही नहीं पाये। पहले कुछ अनुभव जो है संकलित किये हैं गीताप्रेस के हनुमान प्रसाद पोद्दारजी ने 'गोसेवा के चमत्कार' इस नाम की पुस्तक में जो आप को दे देंगे जब आप पधारेंगे। तो उनमें ये सत्य घटनाएँ है सारी। आप देखेंगे की एक आदमी ने कीचड़ में से गाय को बचाया था। वो आदमी जिसको स्वतन्त्रता के समय फाँसी पर लटका दिया। फाँसी पर लटकाने के लिये जैसे ही फांसी की रस्सी ढीली करे वैसे ही वो ही गाय उसके पाँवों के नीचे सींग लगा दे और किसी को दिखे नहीं।..*शेष अगले अंक में*

श्री गोभागवत कथा

कथा व्यास

परम पूज्य द्वाराचार्य महंत श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज

पिछले अंक से आगे....

भगवान के दर्शन किये, भगवान ने शंख का स्पर्श करा दिया ध्रुवजी कुछ बोल नहीं रहे हैं, केवल हाथ जोड़कर खड़े हैं। ''**कृतांजली ब्रह्ममयेन कम्बुना पस्पर्श बालं कृपया कपोले**'' हाथ जोड़ के खड़े है। भगवान की उपासना में भी अनेक मुद्राओं का शास्त्रों में वर्णन है। दक्षिण के मन्दिरों में तो आप देखेंगे कि वहाँ दक्षिण की उपासना, पूजा पद्धति में तो वो वहाँ के लोग बहुत मुद्रायें करते हैं। हम तो वृन्दावन में रंग मन्दिर में देखते हैं। तरह-तरह की मुद्रायें दिखा-दिखा करके तब वो रंगनाथजी की पूजा करते हैं।

नारद पंचरात्रि के अनुसार और उन मुद्राओं का विधान है- किस मुद्रा को दिखाकर भगवान को उठावें, किस मुद्रा को दिखाकर सुलावें, किस मुद्रा को दिखाकर के भोग लगावें। भोग लगाने के लिए तो बहुत प्रसिद्ध मुद्रा '**धेनुमुद्राम् सम्पदर्शय**' भगवान को धेनुमुद्रा दिखाये बिना भोग नहीं लगता। भगवान कब ग्रहण करते हैं जब उनको गाय के थनोंका दर्शन हो जाए तब प्रसन्न होते हैं। यह धेनुमुद्रा है। इस तरह से गाय के चार थन बन गये धेनुमुद्रा! तो धेनुमुद्रा दिखाकर के ठाकुरजी को भोग लगाया जाता है। अनेक मुद्रायें हैं। शंखमुद्रा, चक्रमुद्रा, धेनुमुद्रा। ये शंखमुद्रा है, शंख का आकार बना है शारंगमुद्रा, वारणमुद्रा, धनुषमुद्रा अनेक मुद्रायें है। भगवान के आराधना, उपासना में उन सबका उपयोग है। कोमुद की मुद्रा, बनमाला मुद्रा, कौस्तुभ मुद्रा। ये सब मुद्रायें भगवान के पूजन में यथा योग्य अवसर पर अनुष्ठान के समय इनका प्रयोग किया जाता है। गायत्री जप करते हैं तो उसमें भी मुद्रा का प्रयोग होता है कि नहीं। जप आदि में चौबीस मुद्रायें, जप के अन्त में आठ मुद्रायें। तो चौबीस मुद्रायें जप के आदि में, आठ मुद्रायें जप के अन्त में इन सबका भी वर्णन मिलता है। अब हम लोग तो ज्यादा पढ़े-लिखे हैं नहीं। अब भगवान की सेवा में मुद्रा दिखानी चाहिए यह भी शास्त्र की आज्ञा है।

तो अब हम क्या करें? '**नारदपंचरात**' का एक वाक्य हमको बहुत अच्छा लगा हमारे जैसे आलसी लोगों के लिए यह मुद्रा अंजलीमुद्रा हाथ जोड़ना यह मुद्रा ऐसी है इसमें ज्यादा कुछ तीन-दो-पाँच करने की आवश्यकता नहीं है। '**अंजलीः परमा मुद्रा शिवपरम् देवम् प्रसादनी**' अंजलीमुद्रा भगवान को जल्दी प्रसन्न करने वाली होती है। '**देख न सकत दिनकर जोरे**' ठाकुरजी का स्वभाव है। ध्रुवजी केवल हाथ जोड़कर खड़े हैं, भगवान ने पांचजन्य शंख का स्पर्श करा दिया। अब तो ध्रुवजी के भीतर सरस्वती जागृत हो गई और श्रीध्रुवजी को वेदमयी दिव्य वाणी प्राप्त हो गई। परमात्मा का जो स्वरूप है इसका उन्हें निश्चय हो गया और वे अत्यन्त प्रेम मग्न होकर के भगवान की स्तुति करने लगे।

ध्रुवजी की स्तुति बड़ी प्यारी स्तुति है श्रीमद् भागवत में ''**योऽन्तः प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्तां संजीवयत्यखिलशकितधरः स्वधानाम्। अन्यांश्च हस्तचरणश्रवणत्वगादीन् प्राणान्नमो भगवते पुरुषाय तुभ्यम्।।**'' यहाँ ध्रुवजी भगवान की स्तुति कर रहे हैं। हे भगवन् ! आप 'अखिल शक्ति धराहा' आप सर्व शक्तीमान हैं, सम्पूर्ण शक्तियों को धारण करने वाले हैं। करतुम अकरतुम अन्यथाकरतुम सर्वसमर्थ परमात्मा हैं। हे भगवन्

! आपने मेरे अन्तःकरण में प्रवेश करके मेरी सोई हुई वाणी को सरस्वती को जागृत कर दिया केवल **''योऽन्तः प्रविश्य मम वाचमिमां प्रसुप्तां''** प्रगाढ़ निद्रा में सोई हुई, प्रगाढ तन्द्रा में पड़ी हुई हमारी बुद्धि को आपने जगा दिया। इतना ही नहीं किया **'अन्यांश्च हस्तचरणश्रवणत्वगादीन'** हस्त-चरण आदि से कर्मेन्द्रिय, अश्रवणत्व आदि से ज्ञानेन्द्रिय, हमारी समस्त ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रियों को ही आप ने जगा दिया। बुद्धि से केवल बुद्धि को नहीं लेना नारायण क्योंकि बुद्धि जो है वो मन के उपर नियंत्रण करती है। इसका तात्पर्य केवल बुद्धि नहीं आपने मेरे अन्तःकरण मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार इस चतुष्ठे को आपने जागृत कर दिया और इतना ही नहीं आपने हमारी सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रिय और हमारी सम्पूर्ण कमेन्द्रियों को जागृत कर दिया। बोले ज्ञानेन्द्रिय, कमेन्द्रिय कहते आदि शब्द क्यों लगाया? बोले केवल ज्ञानेन्द्रिय, कमेन्द्रिय नहीं हमें तो लगता है आपने कृपापूर्वक केवल मन, बुद्धि, चित्त, अहंकर को ही नहीं, केवल ज्ञानेन्द्रिय, कमेन्द्रिय को ही नहीं किन्तु आपने तो कृपापूर्वक हमारे रोम-रोम को जागृत कर दिया है।

बहुत ध्यान देना पड़ेगा! ध्रुवजी को भगवान ने अपने संकल्प से ज्ञान दिया है। देखने में बालक है ध्रुवजी पर उनकी स्तुति बड़ी गम्भीर है, वे कह रहे हैं हमारे अन्तःकरण को जागृत किया, हमारे ज्ञानेन्द्रिय कमेन्द्रियों को जागृत किया इसका तात्पर्य हमें ठीक से समझना पड़ेगा। बुद्धि का जागृत होना क्या है?, वाणी का जागृत होना क्या है?, बोलना नहीं जानता और खूब बढ़िया से बोलने लग गया। तो वाणी जागृत मानी जाएगी। आँख का जागृत होना क्या है? सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप दिखाई पड़ने लग जाये, बारीक दृष्टि हो जाए, यह आँख का जागृत होना है। बारीक से बारीक शब्द सुनाई पड़ने लग जाए तो यह कान का जागृत होना है? अरे! ये नहीं है इसका ताप्तर्य जागृत होने का ताप्तर्य है मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, अन्तःकरण चतुष्ठा केवल भगवान का अनुभव करें। यह अन्तःकरण का जागृत होना है। जागृत मन विषयों की ओर नहीं जाता वह भगवान में लग जाता है। जागृत बुद्धि भगवान में लग जाती है। जागृत चित्त भगवान के चरण कमलों का ध्यान करता है।

जागृत अहंकार क्या है यह अभिमान में भगवान का सेवक हूँ और भगवान मेरे स्वामी हैं। जागृत दृष्टि क्या है? आँख का जागृत होना क्या है? गोपियाँ कह रही हैं अरी सखियों इन शरीर धारियों का नेत्रवान होने का, आँख वाला होने का, यही एक मात्र फल है। इन नेत्रों से गैया चराते, बंशी बजाते श्यामसुन्दर का दर्शन हो। गोचारण करते हुए श्यामसुन्दर का दर्शन हो रहा है तो समझो आँख जागृत है। भगवान के नुपूर की ध्वनि कटीकींकणी की ध्वनि, इनकी बासुरी की ध्वनि सुनाई पड़ती रही है तो समझो श्रवण जागृत हुए। भगवान के दिव्य श्रीअंग के सौरभ की गंध प्राप्त हो चुकी है। चरण कमल मकरंद का आग्राण हो रहा है तो समझो कि नासिका जागृत हुई। भगवन्न नाम का स्वाद मिल गया है तो समझलो जिव्हा जागृत हो गई। भगवत भागवत चरित्र का वर्णन हो रहा है तो समझलो वाणी जागृत हुई नहीं तो ऐसी वाणी मेंढक के समान टर टर बोले उससे क्या लाभ है। हमारी सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों, हमारा अन्तःकरण चतुष्ठे निरन्तर भगवान के अनुभव में लग जाए इसका नाम है जागृत होना और यह जागृति सन्त सद्गुरु देव की कृपा से, उनके अनुग्रह से जब जीव ध्रुवजी के समान

दृढ़ निष्ठा पूर्वक भगवान की उपासना में आये तब भगवान स्वयं प्रगट होकर कृपा करते हैं। तब वस्तुतः जीव का बुद्धि, चित्त, अहंकार, इसकी ज्ञानेन्द्रियाँ, उसकी कर्मेन्दियाँ जागृत होकर निरन्तर सर्वरूप, सर्वमयी भगवान के अनुभव में लग जाती है।

तो आपने ऐसी कृपा की है, हे भगवन् ! कहाँ तक कहें? आपने हमारे प्राणों को भी अनुप्राणित कर दिया है। मेरे प्राणों को भी प्राण बना दिया है कृपा कर के। हे भगवन् ! अब हम क्या करें? हे भगवन् **'नमोभगवते पुरुषाय तुभ्यम्।'** देखो प्रेमी भक्तों के पास भगवान की कृपा के बदले भगवान के चरणों में समर्पित करने के लिये एक प्रणाम के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। प्रणाम ही है। हे नाथ ! 'मोह पर होय प्रति उपकारा, बन्धो तव पद बारम्वारा' आपका उपकार हम से नहीं होता। बस हम तो आपके चरणों में केवल प्रणाम ही कर सकते हैं। 'प्राणेनमों भगवते पुरुषाय तुभ्यम्' हे भगवन् यदि आप एक हैं पर आपका स्वभाव है। 'एकाकी न रमते' तब आप अपनी लीला विलास के हेतु क्रिड़ा निमित इस महतत्व आदि के क्रम से इस विलक्षण सृष्टि को प्रकट करते हैं।

कहाँ तक कहें महाराज! यह पंचभूत, २५ प्रकृति इन सबको आप ही बनाते हैं। इनके माध्यम से ब्रह्म-ब्रह्माण्ड का निर्माण करते हैं। ब्रह्माण्ड का निर्माण करके उसमें भी प्रविष्ठ हो जाते हैं और पिण्ड का निर्माण कर उसमें भी प्रविष्ठ हो जाते हैं। मक्खी-मच्छर के भीतर भी आप ही प्रविष्ठ हो जाते हैं। सब के भीतर आप प्रविष्ठ हो जाते हैं। महाराज! कितने ही जीव तो इतने सूक्ष्म हैं कि आँख से दिखाई नहीं पड़ते। परमात्मा अर्न्तयामी रूप से उनमें भी प्रविष्ठ हैं। हे भगवन् आप प्रविष्ठ होकर फिर 'सृष्ट्वानुविश्य' उनका सृजन करते हैं और फिर उनमें प्रवेश करते हैं और इसके बाद इस गुणमयी सृष्टि के अनुसार कहीं सतोगुण की अधिकता, कहीं रजोगुण की अधि ाकता, कहीं तमोगुण की अधिकता इस त्रिगुणमयी सृष्टी के अनुसार आप सब में व्याप्त हो जाते हैं। इसी से उन नाना नाम और नाना रूपों की भिन्न-भिन्नता दिखाई पड़ती है। वे अनुभव में मनुष्य के आते हैं किन्तु पृथक-पृथक नामरूपों में आप अर्न्तयामी से पृथक रूप से विराजते हैं। बाहरी नाम और रूप पृथक-पृथक हो सकते हैं पर नाना नाम रूपों में विद्यमान पृथक-पृथक होने पर भी ऐसा नहीं हो सकता की हाथी के भीतर का अतःकरण अर्न्तयामी से अलग हो और चींटी के भीतर वाला अलग हो। वैसे एक दर्शन ऐसा भी है वो यह भी कहता है कि चींटी का चेतन अलग और हाथी के भीतर अलग है। उसका तो खण्डन कर दिया है हमारे पूर्वाचार्यों ने। तो एक सिद्धान्त यही है, शास्त्रीय सिद्धान्त यही है एक आप प्रत्येक पदार्थ में अनुप्रतिष्ठित हैं। सब में आप व्याप्त हैं।

तो नाम रूपों का भेद हो सकता है किन्तु उन समस्त नाम रूपों में उनके अर्न्तयामी रूप से विराजमान परमात्माकी उस चित्त शक्ति में उस भगवान की चित्त सामर्थ में भगवान के चित्त सता में भेद नहीं है। महाराज बड़ा सुन्दर उदाहरण है **'नानेव दारुषु विभावसुवद्विभासि'** जैसे तरह-तरह की लकड़ियों में प्रकट हुई आग। प्रत्येक काष्ठ में अग्नि उपस्थिति है और लकड़ी के रगड़से आग उत्पन हो गयी। लकड़ी जलने लगी। अब नाना नाम रूप वाली लकड़ियाँ अग्नि से व्याप्त होने के बाद क्या उनका नानात्व रह जायेगा। चाहे नीम लकड़ी हो, चाहे बबूल की लकड़ी हो, चाहे चन्दन की

लकड़ी हो वे सब लकड़ी अग्नि में पड़कर अग्नि स्वरूप हो जाती है। ऐसे ही हे भगवन्! वस्तुतः यह नाम-रूपात्मक जो जगत है वह नामरूपात्मक जगत भी आप में ही स्थिति है। ऐसा जानकर तत्वज्ञ पुरुष इन नाना नाम रूपों की भिन्नता को देखकर भी उस अभिन्न परमात्मा के परमार्थ तत्वका अनुभव करते रहे हैं। वो सर्वत्र भगवान का दर्शन करते हैं। वो मच्छर में भी भगवान को देखते हैं तो उनके भीतर मच्छर मारने की इच्छा नहीं होती कि हम मच्छर मारें। बहुत से लोग मच्छर मारते हैं, मक्खी मारते हैं। कैसा बढ़िया भगवान ने खिलौना बनाया मच्छर। तुरन्त उड़ जाता है, उड़ता रहता है यह बात ध्रुवजी कह रहे हैं। उसके भीतर सृष्ट्वानुविश्य आपने सृष्टि के भीतर प्रवेश किया तो आप मच्छर के भीतर यात्रा कर रहे हैं आकाश की। जहाँ उनके वाहन में पैट्रोल की कमी पड़ जाती है तो भगवान ने वो सुविधा भी उनको दी कि वह कहीं भी पैट्रोल लेता है और फिर उड़के चल दिये। हंसने की बात नहीं है! महात्माओं में बड़ी दया होती है।

श्रीराधा बाबा गोरखपुर वाले श्रेष्ठ महापुरुष थे। गीतावाटीका गोरखपुर में विराजते थे। सिद्धपुरूष बाबाको गीतावाटीका में मच्छर बाहरों मास रहता है क्योंकि बगीचा है। तो बाबा को मच्छर न खा जाये इसके लिये जब बाबा लेटते तब तुरन्त मच्छरदानी लगा दी जाती। बाबा को मच्छरदानी के भीतर कर देते। बाबा देखते कि अब कोई नहीं, बाबा सोचते की बेचारे मच्छर का आहार हमने छीन लिया, बोले-तो बाबा क्या करते? उस मच्छरदानी से अपने दोनों पैर बाहर निकाल देते। बोलते आ जाओ बड़ा भण्डारा है आ जाओ, आ जाओ। बाबाजी बहुत मुफ्त का खाते हैं। तुम लोग भूखे मरो यह बात ठीक नहीं है। इतने मच्छर ऊपर से नीचे तक पूरे शरीर पर मच्छर ही मच्छर भर जाते। जब कोई सेवक देख लेता तो बाबा कहते जाओ-जाओ ये आ गये तुम्हारे दुश्मन। पैर हीलाते तो मच्छर उड़ जाते। फिर पैर भीतर कर लेते। तात्पर्य कहने का यह है कि यह दया का भाव तब तक नहीं उमड़ता है, भीतर से जब तक यह भाव न बने कि इस मच्छर के भीतर भी परमात्मा है। ठीक है मच्छर से बचने का उपाय हमें करना चाहिए लेकिन जब हमने उसकी सृष्टि नहीं की तो उसको समाप्त करने का कोई अधिकार नहीं है।

आप विचार करें जब मक्खी-मच्छर के प्रति भी सहृदय लोग दया का व्यवहार रखाते हैं तो सम्पूर्ण प्राणियों की रक्षिका-पोषिका-पालिता गाय के प्रति कितनी दया का भाव सब के हृदय में होना चाहिए। वे साधु हृदय के प्राणी गायके तिरस्कार को, गाय की निन्दा को, गायके अपमान को सहन नहीं कर पाते। गायके लिये अपना सर्वोच्च न्यौछावर करने के लिये तत्पर हो जाते हैं। इसलिये गायके प्रति दया क्योंकि गायके रूपमें साक्षात् परमात्मा ही हमारे सन्मुख उपस्थिति हैं।

श्रीध्रुवजी महाराज कह रहे हैं कि हे भगवन् ! आपने अपने संकल्प से ब्रह्माजी को उत्पन्न किया। ब्रह्माजी आपके नाभि कमलमें से उत्पन्न हुए। प्रकट होने के बाद भी वे सृष्टि रचने में समर्थ नहीं थे। तब श्रीब्रह्माजी महाराज ने आपके चरण कमलों की शरण ग्रहण कर ली। हे भगवन् ! आपकी शरणगति के बिना न तो ब्रह्माजी में रचने की सामर्थ्य है और आपकी शरणागति के बिना ना ही रूद्र में संहार की शक्ति है। हे भगवान ! आपकी शरणागति के बिना यह जीवन संस्सृति के चक्र

से मुक्त नहीं हो सकता। ऐसे हे भगवन् ! मुक्त पुरुष भी आपके चरण कमल का आश्रय लेते हैं। **'विस्मर्यते कृतविदा कथमार्तबन्धो'** हे भगवन् ! कोई ऐसा कृतज्ञ पुरुष है जो आपके चरण कमलों का विस्मरण करे, कोई ऐसा कृतज्ञ पुरुष सृष्टि में नहीं है जो आपके चरण कमलों को भूला दे। हे नाथ ! आपके चरण कमलों का स्मरण करना यही कृतज्ञता है। 'कृतेच प्रति कर्तव्यम् ऐस धर्मः सनातन्।' क्योंकि आपमें समस्त प्रकार का उपकार किया। आपके चरणों को भूलते नहीं।

भगवान के चरण क्या हैं? यह बात लिखने योग्य बात है। श्रीवल्लभाचार्यजी ने अपनी सुबोधनी टीकामें भगवान के त्रिभिद चरणों का वर्णन किया है। भगवान के चरण तीन प्रकार के हैं। आदिभौतिक, आध्यात्मिक और आदिदैविक इन त्रिभिद् चरण कमलों का वर्णन श्रीवल्लभाचार्यजी ने किया है। श्रीकृष्ण के अर्थात् परमात्मा के, भगवान के त्रिभिद चरण हैं। कौन-कौनसे हैं? बोले श्रीकृष्ण के आदिभौतिक चरण हैं गोमाता और भागवत का सेवन। यह श्रीकृष्ण के आदिभौतिक चरण हैं। वल्लभाचार्यजी कह रहे हैं- गोमाता के चरण कमल, गोमाता की सेवा, गोपालन, गाय की सेवा और श्रीमद्भागवत् श्रवण।

भागवत् का श्रवण क्यों? केवल गोसेवा क्यों नहीं? (यह ज्ञानानन्दजी एक प्रश्न है) उसका कारण यह है कि गाय भगवान की भी आराध्या, उपास्या है, गाय भगवान की भी इष्ट देवता है, इस बोद्ध बिना भागवत सुनना सम्भव नहीं होगा। भागवत श्रवण इसलिये है कि हमारे भीतर सम्पूर्ण गोभक्ति प्रकट हो जाये। गोभक्ति के पोषण के लिये श्रीमद्भागवत का श्रवण और गोसेवा यह श्रीकृष्ण के आदिभौतिक चरण हैं। बोले इन आदिभौतिक चरणों की सेवा से आध्यात्मिक चरण प्राप्त होते हैं। आध्यात्मिक चरण क्या हैं? बोले गोसेवा और भागवत श्रवण से आध्यात्मिक चरण ज्ञान, वैराग्य और भक्ति। ज्ञान, वैराग्य, भक्ति प्राप्ति का कारण है श्रीकृष्ण के आध्यात्मिक चरण की प्राप्ति और बोले जब ज्ञान, वैराग्य, भक्ति की प्राप्ति हो जायेगी तो उसके बाद श्रीकृष्ण के आदिदैविक चरणों की प्राप्ति होगी। देव से सम्बन्धित जो है वह आदिदैविक है। आदिदैविक माने? **'बंशीविभूषित कराः नवनिरदाभ्याम् पिताम्बरा दुरूणबिम्बफला धरोष्ठात्। पूर्णेन्दसुन्दरमुखार्विन्दनैत्रा कृष्णात् परम किमपि तत्वम् नजानेत्।'** भगवान के मंगलमय आपद् मस्तिष्क पर्यन्त श्रीअंग का दर्शन इसका नाम श्रीकृष्ण के आदि दैविक चरणोंकी प्राप्ति।

श्रीवल्लभाचार्यजी कहते हैं कि बिना आदिभौतिक चरणों की प्राप्ति के आदिअध यात्मिक चरण अर्थात् गोसेवा और भागवत श्रवण के बिना ज्ञान, वैराग्य, भक्ति सम्भव नहीं है और ज्ञान, वैराग्य, भक्ति की प्राप्ति के बिना भगवत् प्राप्ति सम्भव नहीं है। इसलिये भगवत् प्राप्ति जीवन में ईमानदारी से करनी है तो उसका प्रथम सोपान है गोसेवा और श्रीमद्भागवत का श्रवण। यह उसका प्रथम सोपान है। उससे द्वितीय सोपान अपने प्राप्त हो जाता है, आप एक सीढ़ी पर चढ़कर तो देखो दूसरी सीढ़ी अपने आप प्राप्त हो जायेगी और दूसरी सीढ़ी पर चढ़ते ही फिर भगवत् प्राप्ति हो जायेगी। बोलो भक्त वत्सल भगवान की जय।

अब आगे के श्लोक में श्रीध्रुवजी महाराज बड़ा सुन्दर भाव कह रहे हैं। ''**नूनं विमुष्टमतयस्तव मायया ते ये त्वां भवाप्ययविमोक्षणमन्यहेतोः। अर्चन्ति कल्पकतरुं कुणपोपभेग्यमिच्छन्ति यत्स्पर्शजं निरयेऽपि नृणाम्।।**'' .....शेष अगले अंक में

गर्भवती माताके आहार, आचार-विचार, संग, स्वाध्याय आदिका गर्भपर प्रभाव

(लेखिका - श्रीशशिबालादेवी 'विशारद')

प्रतिदिनका हमारा यही अनुभव है कि कुछ बच्चे संसारमें पैर रखते ही अपनी प्रतिभासे जगत्‌को चकाचौंध कर देते हैं और कुछ जन्म लेनेसे पूर्व ही कूच कर जाते हैं। कोई-कोई बच्चे अंगहीन, अंधे, विकृत-अंग या गूँगे होते हैं। ऐसा भी देखनेमें आता है कि कतिपय बालक जन्मके कुछ दिनोंके पश्चात् पागल हो जाते हैं या उन्हें दूसरी भयंकर बीमारियाँ धर दबाती हैं। कुछ जन्मसे ही कमजोर, दुबले-पतले और सुस्त पाये जाते हैं। इसके विपरीत किसी-किसी बालकको देखनेमात्रसे उसकी बुद्धिमत्ताका परिचय मिलता है। उन्नत ललाट, कमल-नेत्र, सुडौल शरीर, हँसमुख चेहरा देखनेवालेका मन लुभा लेता है।

क्या आपने कभी सोचा है कि ये सब बातें गर्भवती माताके आहार, आचार, विचार आदिके प्रभावसे हुई हैं? इनके लिये हम व्यर्थ ही ईश्वरको कोसते या अपने भाग्यका रोना रोते हैं।

आहार

गर्भवतीका आहार बिलकुल हलका, सादा, सुगमतासे पचने योग्य तथा परिमाणमें अल्प होना चाहिये। गर्भस्थ शिशुका स्वास्थ्य, सौन्दर्य, आदि गर्भवतीके आहारपर निर्भर करता है। इस अवस्थामें विशेषता, अधिकांश स्त्रियाँ दुर्बल हो जाती हैं, उनका चेहरा पीला पड़ जाता है, पैर सूज जाते हैं तथा रक्ताल्पता(anaemia)-जैसी बीमारी हो जाती है। इस अवस्थामें यदि उत्तम भोजन नहीं मिला तो प्रसवकालमें बहुत कठिनाइयाँ होती हैं। गर्भवतीको ऐसा भोजन करना चाहिये, जिसमें यथेष्ट परिमाणमें प्रोटीन, विटामिन ए (A), बी (B), सी (C), डी (D) और खनिज लवण आदि विद्यमान हों। पवित्र दूध एक पूर्ण भोजन है। इसलिये गर्भवतीको पर्याप्त मात्रामें दूध मिलना परमावश्यक है। बहुधा यह देखनेमें आता है कि स्त्रियाँ अपने परिवारके लोगोंके लिये तो भोजनपर विशेष ध्यान देती हैं, पर स्वंय उस ओरसे लापरवाह रहती हैं। दूसरोंको अच्छे-से-अच्छा देना और स्वयं न लेना-यह उसकी त्यागवृत्ति तो सराहनीय और आदर्श है, परंतु शरीरकी स्वस्थताके लिये भी ध्यान रखना आवश्यक है। ऐसी परिस्थितिमें परिवारके सयानोंका यह कर्तव्य हो जाता है कि वे गर्भवतीके भोजनपर पूरी निगाह रखें ताकि उसके भोजनमें किसी भी आवश्यक विटामिनकी कमी न रहे।

विटामिन 'ए' से बच्चेका शरीर सुगठित, नेत्र सुन्दर और फेफड़े मजबूत बनते हैं। पालक शाक, बंदगोभी, टमाटर, मूली, फूलगोभी, गाजर और नीबूमें पर्याप्त विटामिन 'ए' मिलता है। मक्खन, दूध, दही, घी, मट्ठामें भी यह विटामिन प्रचुर मात्रामें मिलता है। विटामिन 'बी' से पाचनशक्ति बढ़ती है मजबूत होती है, जिससे बच्चोंको पेटकी बीमारी नहीं होती। जिन माताओंके भोजनमें इस विटामिनकी कमी पायी जाती है, उनके बच्चे सर्वदा पेटकी बीमारीके शिकार बने रहते हैं। यह विटामिन चोकरदार आटेमें सबसे अधिक मिलता है। सब प्रकारकी दालोंमें, शलजमकी कोमल पत्तियोंमें, बथुआ, पालक, मूली आदिमें बहुत मिलता है। विटामिन 'सी' भी आवश्यक है। किसी-किसी स्त्रीको प्रसवके बाद अधिक रक्तपात होने लगता है। उससे बचनेके निमित्त विटामिन 'सी' भी आवश्यक है। चना तथा गेहूँके अंकुरोंमें यह सबसे अधिक मिलता है। टमाटर, नीबू, संतरा तथा अन्य फलोंमें तो मिलता ही है,

पालक शाक तथा शलजममें भी मिलता है। फल तथा शाक खाना कितना श्रेयस्कर होगा, इससे स्पष्ट है। विटामिन 'डी' से बच्चोंकी हड्डी मजबूत बनती है तथा दाँत सुन्दर होते हैं। इसीकी कमीसे बच्चोंको महान् अनर्थकारी रिकेट(Rickets) रोग हो जाता है, जिससे अच्छा होना कठिन है। बच्चे जल्दी चलना नहीं सीखते, देखनेमें सुस्त, कमजोर तथा मरियल-से लगते हैं। शुद्ध मक्खन, पवित्र दूध एवं हरी-हरी सब्जियोंमें पर्याप्त विटामिन 'डी' होता है। सूर्यकी किरणोंसे भी इसे सुगमतापूर्वक प्राप्त कर सकते हैं। नंगे बदन धूपमें बैठकर, विशेषतया प्रातःकालके समय सरसोंका तेल, जिसमें रवि-रश्मि कुछ देरतक पड़ चुकी हों, मालिश करनेसे इस विटामिनको पा सकते हैं।

गर्भवती स्त्रियोंको अधिक उपवास तथा व्रत भी हानिकार है। इससे माँ तथा बच्चे दोनोंकी हानि होनेकी सम्भावना रहती है। पेटमें बच्चेका लालन-पालन माँके आहारपर निर्भर करता है। अधिक उपवाससे गर्भपात होनेका भय रहता है। कहीं ईश्वरकी दयासे ऐसा न हुआ तो बच्चा या तो माँके पेटमें मर जाता है, जन्मता है तो दुर्बल रहता है। प्राचीन ऋषि-महर्षियोंने भी यही सलाह दी है तथा गर्भवती के लिये उपवासका निषेध किया है। इससे मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि पेटको सर्वदा गरिष्ठ भोजनसे भरे रखें। जिस प्रकार उपवास हानिकर है, उसी प्रकार अधिक खाना तथा गरिष्ठ पदार्थोंका सेवन भी हानिकर है। सारांश यह है कि जो भोजन किया जाय वह शुद्ध प्राकृतिक, संतुलित, परिमित एवं हितकर होना चाहिये।

आचार

गर्भवतीकी सोना, उठना, बैठना, खाना, पीना पहनना-ये सभी बातें नियमानुकुल होनी चाहिये। सात घंटेकी नींद ठीक है। कपड़ा ढीला, साफ और स्वच्छ हो। थोड़ा व्यायाम भी अनिवार्य है। जिन स्त्रियोंको घरके काम-काज करना पड़ता है, उनका तो व्यायाम हो ही जाता है; पर जो चुपचाप बैठी रहती हैं, उन्हें थोड़ा हलका व्यायाम लाभप्रद होगा। एक-दो मीलका प्रातःकालीन टहलना हितकर होगा।

गर्भवतीको सर्वदा सुप्रसन्न रहना चाहिये। आनन्द-संवाद-श्रवण, धार्मिक चर्चा, सत्संग तथा सद्ग्रन्थावलोकनसे बच्चेके सूक्ष्म शरीरपर बहुत सुन्दर प्रभाव पड़ता है। बड़े तथा छोटोंके प्रति उचित व्यवहार करना चाहिये। पूज्य जनोंको नित्य अभिनन्दन करनेसे उनके शुभ-आशीर्वादसे अदृश्यरूपसे बच्चेकी उन्नति होती है। छोटोंके प्रति प्रेम, स्नेह तथा दुलार वर्तनसे भावी संतान मृदुभाषी तथा मेलसे रहनेवाली होगी।

विचार

गर्भवती को अपना समय सुख-शान्तिपूर्वक व्यतीत करना चाहिये। उसे अपने मस्तिष्कमें किसी प्रकारकी चिन्ता, शोक, क्रोध, द्वेष या क्लेशको स्थान नहीं देना चाहिये। बच्चेके विचारोंपर उस समयके माँ के विचारोंका यथेष्ट प्रभाव पड़ता है। केवल बच्चेके स्वास्थ्य पर ही नहीं, वरन् माँ के स्वास्थ्यपर भी उन विचारोंका प्रभाव पड़ता है। यह देखा जाता है कि सर्वदा प्रसन्न रहनेवालोंका स्वभाव मृदुल, आकर्षक एवं प्रिय होता है तथा स्वास्थ्य सुन्दर रहता है। इसके विपरीत चिड़चिड़े स्वभाववाले दुर्बल, रुग्ण एवं क्षीणकाय होते हैं। स्त्रियाँ स्वभावतः कोमल प्रकृतिकी होती हैं, अतः उनपर बाह्य वातावरणका शीघ्र प्रभाव पड़ता है। गर्भवतीके लिये अधिक बोलना, रोना, लड़ना-झगड़ना सर्वदा हानिकर है। इनसे कुविचार उत्पन्न होकर उनका कुप्रभाव पड़ता है। उसे सर्वदा नम्र, सहनशील, शान्त, सुहृद् एवं प्रभुभक्त, मधुर तथा मृदुभाषी होना चाहिये

ताकि गर्भस्थ शिशुपर सुप्रभाव पड़े। 'स्त्रीणां भूषणं लज्जा।' महर्षि चरकका विचार है कि जो स्त्री शोक, चिन्तामें फँसी रहती है, उसकी संतान निरुत्साही, दुर्बल तथा डरपोक होती है। गर्भवतीके विचारपर ही बालकका भला-बुरा होना निर्भर करता है। नेपोलियनकी माता एक वीर रमणी थीं। जिस समय नेपोलियन पेटमें था, उस समय उसकी माता लड़ाई, विजय तथा संघर्षकी बातें सोचा करती थीं। परमपूज्य महामना मालवीयजी तथा विश्ववन्द्य महात्मा गाँधीकी माता परम सच्चरित्रा एवं सात्विक भाववाली थीं, जिसका प्रभाव उन महापुरुषोंके जीवनसे स्पष्ट हो जाता है। विश्वमानव पण्डित जवाहर लालजी की माता भी शुद्ध तथा राष्ट्रीय विचारोंकी थीं।

संग

गर्भवतीके लिये सदा अच्छी संगतिमें रहना लाभप्रद है। उसे कलहकारिणी, चुगली तथा परनिन्दा करने वाली, व्यभिचारिणी, उद्दण्ड, कठोरभाषिणी, दुष्टा एवं लड़ने-झगड़नेवाली स्त्रियोंके बीच कभी नहीं रहना चाहिये। उसे निर्मलमति, साध्वी, सच्चरित्रा, सुशीला तथा नेक स्त्रियोंसे सत्-सम्भाषण करना चाहिये। उसे भक्तिरसकी, त्यागभावकी तथा वीररसकी ऐतिहासिक कथाएँ पढ़नी चाहिये। लज्जाहीन तथा गुणहीन स्त्रियोंके समीप भूलकर नहीं बैठना चाहिये। गंदे नाटक, अश्लील सिनेमा भूलकर भी नहीं देखना चाहिये। काम-सम्बन्धी चर्चा कभी नहीं करनी चाहिये। पतिसहवास सर्वथा हानिकर। अन्यथा संतान निर्लज्ज, बुद्धिहीन तथा कामुक हो जायगी। इस विषयमें पशुओंसे शिक्षा लेनी चाहिये। मा पशु (मादा) नरको अपने पास उन दिनों आनेतक नहीं देती। महापुरुषोंके और भगवान्‌के दो-एक चित्र अपने कमरेमें अवश्य रखने चाहिये। उन्हें एकाग्रचितसे देखनेमात्रसे भी सत्संगतिका लाभ होना। हरिचर्चा, हरि-कथा तथा सत्संगसे विशेष लाभ होगा।

स्वाध्याय

ऊपर की सब बातोंके साथ-साथ स्वाध्यायके लिये भी सुन्दर, सात्विक, सदाचारपूर्ण पुस्तकोंका चुनाव होना आवश्यक है। अश्लील पुस्तकें, भद्दे गानेकी किताबें गर्भस्थ शिशुके मस्तिष्कपर कुसंस्कार तथा कुविचार डालती हैं। भगवान राम, भगवान श्रीकृष्ण, हरिशचन्द्र, युधिष्ठिर, भीष्म, ऋषि-मुनि, महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी एवं अन्य महापुरुषोंकी जीवनी पढ़नेसे लाभ होगा। काम, सिनेमा, फिल्म-चित्र-सम्बन्धि पुस्तकें घोर अनर्थ करेंगी।

बालकके जीवनमें आध्यात्मिकताका पुट डालनेके लिये सद्ग्रन्थोंका अध्ययन अति आवश्यक है। एक धार्मिक संतान सिर्फ अपना ही कल्याण नहीं करती, वरन् अपने पूर्वजोंतकका उद्धार करती है। नित्य श्रीमद्भगवतगीता, रामायण, महाभारत पुराण, योगवासिष्ठ, उपनिषद्-प्रभृति धार्मिक पुस्तकोंके अध्ययनमात्रसे आध्यात्मिक स्पन्दन बालकके सूक्ष्म विचारोंपर पड़ेगा। उन सद्गन्थोंमें कथित विचारोंपर मनन भी नितान्त आवश्यक है। भगवान् श्रीकृष्ण ने अपने मुखारविन्दसे विश्व के महाकाव्य श्रीमद्भगवगीता में स्वयं कहा है-

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।।

इससे स्पष्ट है कि शुद्ध सात्विक जीवन बितानेवाली माताएँ ही महान् आत्माको अपने उदरमें रखने का दावा कर सकती हैं। उच्च आत्माएँ विशेष कार्यके लिये जगत्‌में अवतार लेती हैं। माताएँ अपने आचार-विचार तथा जीवनको पवित्र बनाकर संसारका बहुत बड़ा कल्याण कर सकती हैं तथा स्वतन्त्र भारतके भावी संतानको वीर, बुद्धिमान, चतुर तथा विश्वहितैषी बनानेमें सहायता प्रदान कर सकती हैं। भगवान् सबको सन्मति और शान्ति दें।

संत नामदेव की गौ निष्ठा

(लेखकः- सतीश चन्द्र चौरसीया 'सरस')

श्री ज्ञानेश्वर, सोपान देव, निवृत्तिनाथ, 'गोरा कुम्हार'।
'साँवला-माली' 'चोखा-मैला', 'सेना-नाई' 'नरहरि सुनार'।।
'मुक्ताबाई' 'गौड़ाबाई' सब महाराष्ट्र के संत भले।
सम्पूर्ण देश कल्याण हेतु, श्री नामदेव के साथ चले।।
यह संत मण्डली हरि-कीर्तन, करती यात्रा में जाती है।
यह जहाँ पहुँचती जनहित में, शुभ अमृत रस टपकाती है।।
श्री नामदेव हरि-संकीर्तन, सिखलाने दिल्ली आते हैं।
सूचना मिली तो बादशाह, अपने दरबार बुलाते हैं।।
सम्पूर्ण मंडली संतों को, भिजवाया शाह निमंत्रण है।

गौ कामधेनु सुखदाता का, सौ बार 'सरस' अभिनंदन है।।

(20)

बन जाँय मुसलमाँ नामदेव, यह शाहंशाह की इच्छा है।
मन में था गौ कटवाकर लूँ, अब इनकी कठिन परीक्षा है।।
श्री नामदेव करते कीर्तन, ज्यों ही दरबार में जाते हैं।
तो बादशाह मँगवाकर गौ, उसकी गर्दन कटवाते हैं।।
यह दृश्य देख सब दाँत तले, उँगली दबाय रह जाते हैं।
तो शाहंशाह श्री नामदेव से, यह फरमान सुनाते हैं।।
सच्चे फकीर हो नामदेव तो, मरी गाय जीवित कर दो।
अन्यथा संतपन ढोंग छोड़, इसलाम धर्म स्वीकृत कर लो।।
मुझमें है कोई शक्ति नहीं, सब कुछ कर्ता नंदनंदन है।

गौ कामधेनु सुखदाता का, सौ बार 'सरस' अभिनंदन है।।

(21)

बन जाओ मुसलमाँ नामदेव, तब तो निश्चय बच जाओगे।
अन्यथा आज ही मतवाले, हाथी द्वारा मारे जाओगे।।
मतवाला हाथी मार रहा, पर नामदेव बच जाते हैं।
बह रही अश्रुधारा अविरल, प्रभु आओ टेर लगाते हैं।।
मुझमें है कोई शक्ति नहीं, प्रभु चाहें वह ही होता है।
प्रभु गौ माँ को जीवित कर दो, क्यों ह्रास ध र्म का होता है।।
अल्लाह नाम लेओ विट्ठल, यह दृश्य न देखा जाता है।
सुन ले मैं तेरा पुत्र नहीं, तू नहीं हमारी माता है।।
गौड़ाबाई उपदेश न कर, शब्दों पर करो नियंत्रण है।

गौ कामधेनु सुखदाता का, सौ बार 'सरस' अभिनंदन है।।

(22)

आनंदकंद श्री भक्तवत्सल, बैकुण्ठ गरुण चढ़ि आते हैं।

प्रिय नामदेव की आन राखि, प्रभु मुर्दा गाय जिलाते हैं।।
प्रिय नामदेव तुम धन्य-धन्य गौ रक्षा प्राण लगाये हैं।
स्तुत्य बंद्य गौ प्रेम तेरा, हम तेरे दर्शन पाये हैं।।
पानी-पानी हो गया शाह, श्री संत शरण में आया था।
क्यों संत परीक्षा ली मैंने, यह कहकर वह घबराया था।।
विछड़े ज्यों बछड़ा गैया से, व्याकुलता बढ़ती जाती है।
बस उसी तरह हरि सुमिरन बिन, नहिं शांति 'नाम' को आती है।।
सिक्खों के गुरु ग्रन्थ साहब में, इस घटना का वर्णन है।

गौ कामधेनु सुखदाता का, सौ बार 'सरस' अभिनंदन है।।

श्रद्धाजंलि

जीवन पर्यन्त समर्पित गोभक्त-गोसेवक रहे स्वर्गीय श्रीनारायणजी पुत्रश्री हबताजी (वजोणी) राजपुरोहित पूर्व सरपंच रेवतड़ा (जालोर) के 22 फरवरी, 2012 को आकस्मिक गोलोकवास से देश भर के गोभक्त-गोसेवक शोकाकुल है।

प्रभु इच्छा एवं विधि का विधान प्रबल है। राष्ट्रीय कामधेनु कल्याण परिवार, गोधाम पथमेड़ा पूज्या गोमाता एवं परम पिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को गोलोकवास में स्थान तथा परिवार जनों को इस शोक की घड़ी में धैर्य एवं साहस प्रदान करने की कामना करता है।

पृष्ठ संख्या 27 का शेष भाग.....

धीकान्तिस्मृतिदायकं बलकरं मेधाप्रदं पुष्टिकृद्
वातश्लेष्महरं श्रमोपशमनं पित्तापहं हृद्धितम् ।
वह्नेर्वृद्धिकरं विपाकमधुरं वृष्यं वपुः स्थैर्य्यदं
गव्यं हव्यतमं घृतं बहुगुणं भोग्यं भवेद् भाग्यतः ।।
(शालि०नि०)

अर्थ- गाय का घी बुद्धि, कान्ति और स्मरणशक्तिदायक, बलकारक, मेधाजनक, पुष्टिकारक, वातश्लेष्महारक, श्रमनिवारक, पित्तनाशक, हृदय को हितकारी, अग्निप्रदीपक, पचने में मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, शरीर को स्थिरतादायक, हव्यतम, बहुगुणयुक्त और अतिशय भाग्य से ही प्राप्त होने वाला है ।अन्यच्च -

सर्पिर्गवां चाप्यमृतं विषघ्नं
चाक्षुष्यमारोग्यकरं च वृष्यम् ।
रसायनं चेदमतीवमेध्यं
स्नेहोत्तमां गां विबुधाः स्तुवन्ति ।।

अर्थ- गाय का घी अमृत के समान गुणकारी, विषविनाशक, नेत्रों के लिये आरोग्यप्रद, वीर्यवर्द्धक, रसायन, मेधाजनक और सभी स्निग्ध पदार्थो में उत्तम है ।

आयुर्वेद ने विभिन्न रङ्ग वाली गायों के दुग्ध, दही एवं घृत आदि पर बहुत विश्लेषण किया है । गोवंशपुराण में साङ्गोपाङ्ग वर्णन का प्रयास किया जायेगा ।

गौरूपी तीर्थमें गंगा आदि सभी नदियों तथा तीर्थोंका आवास है,
उसकी परम पावन धूलिमें पुष्टि विद्यमान है,
उसके गोबरमें साक्षात् लक्ष्मी विराजमान है
और उसे प्रणाम करनेसे धर्म सम्पन्न हो जाता है।
अतः गोमाता सदा-सर्वदा प्रणाम करनेयोग्य है।'

श्री कृष्ण और पुजारी का संवाद

एक गोसेवक

पिछले अंक से आगे.....

पुजारी को भयंकररूप से घबराया हुआ देख कर प्रभु ने अब अपना विराट रूप समेट लिया। प्रभु की इतनी कठोर और सत्य वाणी सुनकर पुजारी घोर पश्चाताप और गहरे सोच में डूब जाता है। मन ही मन सोचता है कि हो न हो बात तो गायों के सम्बन्ध में ही होगी। हमारे से ऐसी क्या भूल हो रही है, जिसके लिये ठाकुरजी आज इतने सख्त हो रहे हैं। विषय अवश्य कोई गम्भीर है, छोटी-मोटी बात से तो श्रीकृष्ण इतने नाराज नहीं हो सकते। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था, तब घबराकर वह थर-थर कांपता हुआ पुनः प्रभु के चरणों में गिर पड़ता है)

पुजारी- हे गोविन्द ! हे गोपाल ! हे दीन दयालु ! मेरी रक्षा करो ! मेरी रक्षा करो ! मुझे परशुरामजी से बचाओ ! वे मुझे मार डालेंगे ! मैं अब कभी गाय के प्रति कोई अपराध नहीं करूँगा ! आप कहोगे वैसे करूँगा। गोमाता के चरणों में रहूँगा। मेरी रक्षा करें भगवन्, मैं आपकी शरण हूँ। मैंने आपके प्रति और गोमाता के प्रति जरूर कई घोर अपराध किये होंगे। प्रभु! जिस विषय पर आप कह रहे हैं, उधर थोड़ा प्रकाश करावें।

श्रीकृष्ण- हे पुजारी ! मंदिर में प्रति माह सैंकडों गायें भक्त लोग चढ़ावे में मेरे नाम पर चढ़ाकर जाते हैं, वे सब गायें कहाँ हैं ? वे सब मेरी गायें हैं, आज मैं उन सब गोमाताओं के दर्शन करना चाहता हूँ। मुझे उनके दर्शन करवाओ।

पुजारी- प्रभु ! इतनी गायों से क्या करते इसलिये हम उन्हें निलाम कर देते हैं, जिससे मंदिर को अच्छी खासी आमदनी हो जाती है और उनकी सेवा पर व्यर्थ में होने वाला खर्चा और परिश्रम, इन दोनों से मुक्ति मिल जाती है। यहाँ तो सब भक्तलोग रहते हैं जिनके पास जप, कीर्तन, भजन, ध्यान, पूजा-पाठ के अलावा अन्य फालतू के कार्यों के लिये समय ही कहाँ हैं ? क्षमा करें प्रभु ! अब उन गायों के बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है। निलामी में अधिक बोली लगाने वाला उन्हें खरीदकर ले जाता है बस इससे आगे हमने उनसे कुछ नहीं पूछा कि वे उन गायों को कहाँ ले जाते हैं और उनसे क्या करते हैं ? प्रभु ! अब उनके दर्शन करवाने में मैं असमर्थ हूँ। वे गायें आपकी थी, तो प्रभु वे पैसे भी आपके श्रृंगार के लिये काम में ले लेंगे।

श्रीकृष्ण- मेरा पुजारी और देखो सोच कितनी गिरी हुई ! तरस आ रहा है तुम्हारी अक्ल पर। तुम जैसे लोगों से मिलकर कोई क्या प्रेरणा ले सकता है ? देखो ! इस देश और धर्म का दुर्भाग्य। श्री कृष्ण का पुजारी और 'गो' के सम्बन्ध में इसके पास क्या ज्ञान है आज ? किस तरह के लोग आज मंदिरों और धार्मिक स्थानों में विराजमान हैं ? ये क्या भला कर सकते हैं गोमाता का, इनसे आज भारत देश की १२० करोड़ धर्मभीरू जनता क्या अपेक्षा कर सकती है ? राजा और प्रजा दोनोंको जहाँ से दिशा मिलनी चाहिये, वे स्वयं घोर अंधकार में हैं, तो फिर गो की ऐसी दशा होनी ही है।

तुम्हारे मंदिर में कितनी सम्पत्ति है, क्या तुम उसका हिसाब लगा सकते हो ? अरे अक्ल के अंधों ! इतनी अथाह सम्पत्ति होते हुए भी तुम्हारा मन नहीं भरा ? कसाइयों को

गायें बेचकर और सम्पत्ति इकट्ठी कर रहे हो। तुम किसी को मुँह दिखाने के लायक नहीं हो। तुम्हें तो अभी इसी समय शूली पर चढ़ा देना चाहिये। क्या तुम्हें पता है, निलामी में गायों को ऊँचे दामों पर कौन खरीदता है ? वो उनसे क्या करता है ? अरे दुष्टों ! एक बालक भी इस बात को आसानी से समझ सकता है। इस मंदिर से निलामी में जितनी भी गायें आपने बेची हैं, वे सब कसाई खाने गई और अब तक उन्हें मारकर लोग खा चुके हैं। बेचारी भोली और विश्वासी जनता ! जो मंदिर को सबसे सुरक्षित जगह समझ कर गायों को यहाँ छोड़कर जाते हैं और आप लोग चन्द कोड़ियों के लिये गोवंश को कसाइयों के हाथों बेच देते हो। तुम्हारे इस कुकृत्य के लिये बड़ी-से-बड़ी सजा दी जाये तो भी वह कम पड़ती है।

हे मूर्ख पुजारी ! तुम जो यह कह रहे हो कि इतनी गायों से क्या करते, इसलिये बेच देते हो, तो यह बताइये कि इतने धन से क्या करोगे ? क्या मरोगे तब छाती पर साथ लेकर मरोगे ? नन्दबाबा के पास कितनी गायें थी, क्या वे तुम लोगों से कम भक्त थे ? यदि ज्यादा कुछ नहीं समझते हो तो इतना तो समझते ही हो कि गाय यदि केवल गोबर और गोमूत्र दे तो भी उससे बंजर भूमि तो उपजाऊ होती है, क्या यह कार्य तुम्हारा धन कर सकता है ? धन से भी खरीदनी तो वस्तुएँ ही पड़ेगी। जब वस्तुएँ होगी ही नहीं तो धन-दौलत से क्या करोगे ?

'गो' इस धरती पर साक्षत् मेरा स्वरूप है। गो की सेवा से ही मेरी प्राप्ति हो जाती है। मेरे निकट आने का सबसे सुगम रास्ता ही गो का संग है। स्वाँग धार्मिक और कार्य गो कसाई का, क्या तुम्हारे स्वयं के कहने से भक्त हो गये ? क्या तुम्हारा अब तक का जीवन तुम्हें गोलोक ले जा सकेगा ? कदापि नहीं ! अरे दुष्टों यमदूत भी तुम्हारी शक्ल देखना नहीं चाहते, वो भी तुम्हारे मुँह पर काला कपड़ा बाँधकर नरक में ले जायेंगे। गोपालन को तुम जो व्यर्थ का कार्य कह रहे हो, मेरी दृष्टि में इस पृथ्वी पर यह सबसे प्राथमिक और पुनित कार्य है। गो पर ही सम्पूर्ण सृष्टि अवलम्बित है। क्या तुम्हें इतनी समझ नहीं कि जो कार्य सबसे महत्व का होता है, उसे ही तो मैं करता हूँ। क्या फालतू के कार्य करने के लिये अवतार होते हैं ?

तुम लोगों ने बिना जानकारी किये केवल दाम अधिक देने से किसी को भी गायें कैसे बेच दी ? क्या तुम अपनी बहन-बेटियों को भी बिना जानकारी किये अधिक दाम देने वाले किसी अनजान के हाथों रवाना कर देते हो ? वहाँ सब कुछ पता क्यों करते हो ?

इतना अशुद्ध धन और ऊपर से कह रहे हो कि मेरे श्रृंगार में काम लोगे, क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। अरे दुष्टों ! तुम्हारे ऐसे श्रृंगार को स्वीकार भी करलूँ तो मुझे भी गो हत्या का पाप लगे।

पुजारी- हे प्रभु ! मेरे कुकर्मों के लिये जो कि क्षमा योग्य नहीं है, फिर भी मैं एक ब्राह्मण आज आपसे क्षमा माँगता हूँ। क्योंकि जो मेरे कर्मों के फल तो इतने कठोर होगें कि सोचकर ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मैं असंख्य जन्म लेकर भी उनमें से एक तिल के बराबर भी कम नहीं कर पाऊँगा। आप ही की कृपा से मुझे मनुष्य शरीर मिला और आपका पुजारी होने का ऐसा परम पवित्र अवसर मिला जिसमें कि मैं आप ही की कृपा से आपको पूर्ण प्रसन्न कर आपका प्रतिक्षण वर्धमान प्रेम प्राप्त कर सकता था, उसके स्थान पर मुझे आज पता पड़ा कि मैंने तो अपना आधा जीवन खर्च कर

बदले में आपकी घोर नाराजगी खरीद ली है। अब मुझे कोई बचा नहीं सकता। मुझे मनुष्य बनाने के आपके प्रयास और मेरा यह मनुष्य जीवन दोनों व्यर्थ जा रहे हैं।

हे गाय और ब्राह्मणों के रक्षक ! जिस प्रकार साधु के पास की तुम्बी चार धाम की यात्रा करके भी कड़वी की कड़वी ही रहती है, उसी प्रकार मैं नित आपके समीप रहकर भी मूर्ख और अपराधी ही रहा। मुझे इतने बड़े मंदिर का पुजारी होने का अहंकार ले डूबा। मुझे कभी होश भी नहीं रहा कि मैं क्या हूँ और क्या कर्म कर रहा हूँ ? हे प्रभु मुझे आप बचा लें।

श्रीकृष्ण- हे पुजारी ! आपको तो पुजारी कहते हुए भी मुझे झिझक होती है। किसकी ताकत है जो गो के प्रति किये गये अपराधों को क्षमा कर सकता है। गोमाता यदि स्वयं चाहे तो आपको बचा सकती है, अन्यथा आपकी और मंदिर के समस्त पदाधिकारियों की दुर्गति अवश्यंभावी है। भोलेनाथ भी चाहे तो तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकते।

हाँ गोमाता, वो माँ है और माँ कभी अपने पुत्रों का अनिष्ट नहीं चाहती। लेकिन तुम्हारे द्वारा किये गये घोरकर्म ही तुम्हें ले डूबेंगे।

पुजारी- हे मेरे देव ! हे मेरे मालिक ! गलती होनी थी सो हो चुकी, अब हमें सही रास्ते पर लाने की अति कृपा करावें। लोभ और अहंकार में हम अंधे हो गये थे। हमें पहले भी कुछ संतों ने इन गलत कार्यों को छोड़ने के लिये कहा था, लेकिन हम धन के मद में इतने बड़े बन गये थे कि किसी को कुछ गिनते ही न थे। साधुओं को तो हम भिखारी के समान ही समझते थे। अब तो प्रभु ! हमारे कल्याण का रास्ता बतायें। मैं मंदिर के महंत और सारे ट्रस्टिओं को जो आपकी आज्ञा होगी वो समझा दूँगा। ट्रस्टी तो बेचारे हमारे कहने पर चलते हैं। सबसे बड़े गुनहगार तो मैं और महंतजी हैं। प्रभु ! हमारे धन और हमारे शेष जीवन को सत्कर्मों में लगाने की कृपा करावें, हम आपके सदैव आभारी रहेंगे।

श्रीकृष्ण- अब तूँ कान खोलकर ध्यानपूर्वक सुन। धर्म के नाम पर लिया पैसा, धर्म के नाम पर मिला पद, धर्म के नाम पर मिली प्रतिष्ठा ये सब धर्म के लिये ही लगना चाहिये। व्यक्तिगतरूप से तुम्हारे पास क्या है ? तुम्हारी अक्ल के हिसाब से किसी के पास नौकरी करके देख लो, तुम्हें कोई २००० माहवारी पर भी नहीं रखेगा। घर में झाड़ू-पौछे के अलावा तुम्हें क्या आता है ? यह जो अरबों-खरबों का धन जो आज मंदिर में है, यह सब मेरे नाम से आता है। तो अब इसका उपयोग भी मेरे नाम से और मेरे अनुसार ही करना।

मेरा परिवार है गोवंश ! आज उसकी यह जो दशा है, उसके सुधार हेतु सारा धन तुझे लगाना है। एक-एक पाई का हिसाब अब मैं रखूँगा। अब से एक पाई का भी तेरे जीवन निर्वाह के अलावा कहीं दुरूपयोग कर दिया तो फिर सुन ले मेरे जैसा खतरनाक कोई नहीं होगा। फिर वार करते मैं यह नहीं देखूँगा कि सामने ब्राह्मण है या साधु, पुजारी है या महंत। मैं केवल और केवल यह देखता हूँ कि मेरे सामने जो है यह गाय का हितैषी है या विरोधी। बस मेरे पास अब केवल एक ही पैमाना रह गया है तुम्हारी भक्ति को नापने का।

अब सबसे पहला कार्य आपके मंदिर के पदाधिकारियों को यह करना है कि इस भीड़ से दूर शांत स्थान में अधिक से अधिक जितनी मिल सके, भूमि खरीदो। उस भूमि पर एक विशाल 'गो-अभ्यारण्य' स्थापित करो। ऐसा गो-अभ्यारण्य *.....शेष अगले अंक में*

दान-एक विहंगम दृष्टि

साभारः- दानमहिमा अंक

(लेखक- सम्पादक गीताप्रेस राधेश्याम खेमाका)

सफल जीवन जीनेके लिये दानकी अनिवार्यता

सफल जीवन क्या है? जीवन सफल उसीका है, जो मनुष्य-जीवन प्राप्तकर अपना कल्याण कर ले। भौतिक दृष्टिसे तो जीवनमें सांसारिक सुख औ समृद्धिकी प्राप्तिको ही हम अपना कल्याण मानते हैं, परंतु वास्तविक कल्याण है--सदा-सर्वदाके लिये जन्म-मरणके बन्धनसे मुक्त होना अर्थात् भगवत्प्राप्ति। अपने शास्त्रोंने तथा अपने पूर्वज ऋषि-महर्षियोंने सभी युगोंमें इसका उपाय बताया है। चारों युगोंमें अलग-अलग चार बातोंकी विशेषता है। सफल मानव-जीवनके लक्ष्यकी प्राप्तिके लिये मानव धर्मशास्त्रके उद्भावक राजर्षि मनुने चारों युगोंके चार साधन बताये हैं-

तपः परं कृतयुगे त्रेतायां ज्ञानमुच्यते।
द्वापरे यज्ञमेवाहुर्दानमेकं कलौ युगे।।

सत्ययुगमें तप, त्रेतामें ज्ञान, द्वापरमें यज्ञ और कलियुगमें एकमात्र दान मनुष्यके कल्याणका साधन है। गोस्वामी तुलसीदासजीने भी लिखा है-

प्रगट चारि पद धर्म के कलि महुँ एक प्रधान।
जेन केन बिधि दीन्हें दान करइ कल्यान।।

गोस्वामीजीका यह वचन तैत्तिरीयोपनिषद् के निम्न प्रसिद्ध वचनोंपर ही आधृत है-

'श्रद्धया देयम्। अश्रद्धयादेयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्।'

अर्थात् दान श्रद्धापूर्वक करना चाहिये, बिना श्रद्धाके करना उचित नहीं (**श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया अदेयम्**) अपनी सामर्थ्यके अनुसार उदारतापूर्वक देना चाहिये (**श्रिया देयम्**), विनम्रतापूर्वक देना चाहिये (**ह्रिया देयम्**), दान नहीं करूँगा तो परलोकमें नहीं मिलेगा-इस भयसे देना चाहिये अथवा भगवान्ने मुझे देनेयोग्य बनाया है, पर दूसरोंको न देनेपर भगवान्को क्या मुँह दिखाऊँगा-इस भयसे देना चाहिये (**भिया देयम्**), प्रमादसे, भयसे, या उपेक्षापूर्वक न देकर ज्ञानपूर्वक, विधिपूर्वक, आदरपूर्वक एवं उदारतापूर्वक निःस्वार्थ भावसे देना चाहिये (**संविदा देयम्**), चाहे जैसे भी दो, किंतु देना चाहिये। मानवजातिके लिये दान परमावश्यक है। दानके बिना मानवकी उन्नति अवरुद्ध हो जाती है।

इस प्रसंगमें बृहदारण्यकोपनिषद्की एक कथा है- एक बार देवता, मनुष्य और असुर तीनोंकी उन्नति अवरुद्ध हो गयी। अतः वे सब पितामह प्रजापति ब्रह्माजीके पास गये और अपना दुःख दूर करनेके लिये उनकी प्रार्थना करने लगे। प्रजापति ब्रह्माने तीनोंको मात्र एका अक्षरका उपदेश दिया- 'द'। स्वर्गमें भोगोंके बाहुल्यसे भोग ही देवलोकका सुख माना गया है, अतः देवगण कभी वृद्ध न होकर सदा इन्द्रिय-भोग भोगनेमें लगे रहते हैं, उनकी इस अवस्थापर विचारकर प्रजापतिने देवताओंको 'द' के द्वारा दमन-इन्द्रियदमनका उपदेश दिया। ब्रह्माके इस उपदेशसे देवगण अपनेको कृतकृत्य मानकर उन्हें प्रणामकर वहाँसे चले गये।

असुर स्वभावसे ही हिंसावृत्तिवाले होते हैं, क्रोध और हिंसा इनका नित्यका व्यापार है, अतएव प्रजापतिने उन्हें इस दुष्कर्मसे छुड़ानेके लिये- 'द' के द्वारा जीवमात्रपर दया करनेका उपदेश किया। असुरगण ब्रह्माकी इस आज्ञाको शिरोधार्यकर वहाँसे चले गये।

मनुष्य कर्मयोगी होनेके कारण सदा लोभवश कर्म करने और धनोपार्जनमें ही लगे

रहते हैं। इसलिये प्रजापतिने लोभी मनुष्योंको 'द' के द्वारा उनके कल्याणके लिये दान करनेका उपदेश दिया। मनुष्यगण भी प्रजापतिकी आज्ञाको स्वीकारकर सफलमनोरथ होकर उन्हें प्रणामकर वहाँसे चले गये। अतः मानवको अपने अभ्युदयके लिये दान अवश्य करना चाहिये।

'विभवो दानशक्तिश्च महतां तपसां फलम्।

विभव और दान देनेकी सामर्थ्य अर्थात् मानसिक उदारता-ये दोनों महान् तपके ही फल हैं। विभव होना तो सामान्य बात है। यह तो कहीं भी हो सकता है, पर उस विभवको दूसरोंके लिये देना-यह मनकी उदारतापर ही निर्भर करता है, यही है दान-शक्ति, जो जन्म-जन्मान्तरके पुण्यसे ही प्राप्त होती है।

महाराज युधिष्ठिरके समयकी एक घटना है-

उद्दालक नामके एक ऋषि थे। अकस्मात् उनके पिताका देहान्त हो गया। मुनिने अपने पिताकी अन्त्येष्टि चन्दनकी लकड़ीकी चितापर करनेका विचार किया, पर चन्दनकी लकड़ी उनके पास तो थी नहीं। वे धर्मराज युधिष्ठिरके पास पहुँचे और उनसे चन्दनकी लकड़ीकी याचना की। धर्मराजके पास चन्दन-काष्ठकी तो कमी नहीं थी, परंतु अनवरत वर्षा होनेके कारण सम्पूर्ण काष्ठ भीग चुका था। गीली लकड़ीसे दाह-संस्कार नहीं हो सकता था, अतः उन्हें निराश लौटना पड़ा। इसके अनन्तर वे इसी कार्यके निमित्त राजा कर्णके पास पहुँचे। राजा कर्णके पास भी ठीक वही परिस्थिति थी, अनवरत वर्षाके कारण सम्पूर्ण काष्ठ गीले हो चुके थे, परंतु मुनिको पितृदाहके लिये चन्दनकी सूखी लकड़ीकी आवश्यकता थी। कर्णने तत्काल यह निर्णय लिया कि उनका राजसिंहासन चन्दनकी लकड़ीसे बना हुआ है, जो एकदम सुखा है, अतः उन्होंने यह आदेश दिया कि चन्दनसे बने मेरे सिंहासनको तुरन्त खोल दिया जाय तथा इसको काटकर चिताके लिये इसकी लकड़ी मुनि उद्दालकको दे दी जाय। इस प्रकार उन मुनि उद्दालकके पिताका दाह-संस्कार चन्दनकी चितापर सम्भव हो सका। चन्दनके काष्ठका सिंहासन महाराज युधिष्ठिरके पास भी था, पर यह सामयिक ज्ञान- मौकेकी सूझ और मनकी उदारता इस रूपमें उन्हें प्राप्त न हुई, जिसके कारण वे इस दानसे वंचित रह गये और यह श्रेय कर्णको ही प्राप्त हो सका। इसीलिये कर्ण दानवीर कहलाये।

दानके लिये स्थान, काल एवं पात्रका विचार

शास्त्रोंमें दानके लिये स्थान, काल और पात्रका विस्तृत विचार किया गया है-

गीतामें भी भगवान्‌ने कहा है-

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्॥

स्थान- दान किसी शुभ स्नानपर अर्थात् काशी, कुरुक्षेत्र, अयोध्या, मथुरा, द्वारका, जगन्नाथपुरी, बदरीनारायण, गंगोत्री, यमुनोत्री, केदारनाथ, हरिद्वार, प्रयाग पुष्कर आदि तीर्थोंमें; गंगागर्भ, गंगातट, मन्दिर, गोशाला, पाठशाला, एकान्तस्थल अथवा सुविधानुसार अपने घर आदि कहीं भी पवित्र स्थलपर करना चाहिये।

काल- शुभ कालमें अर्थात् अच्छे मुहूर्तमें दान देना चाहिये। वैसे तो दान मनमें उत्साह होनेपर तत्क्षण करना चाहिये, कारण जीवनका कुछ पता नहीं कि वह कब समाप्त हो जाय, परंतु पुण्यकी दृष्टिसे शास्त्रोंने कुछ विशिष्ट काल भी निर्धारित कर रखे हैं। शास्त्रोंके अनुसार अमावस्यामें दानका फल सौ गुना अधिक, उससे सौ गुना दिनक्षय अर्थात् तिथिक्षय होनेपर, उससे सौ गुना मेष आदि संक्रान्तियोंमें, उससे सौ गुना विषुव (समान दिन-रात्रिवाली तुला-मेषकी संक्रान्तियों)-में, उससे सौ गुना युगादि तिथियोंमें (कार्तिक शुक्लपक्षकी अक्षय

नवमीमें सत्ययुग, वैशाख शुक्लपक्षकी अक्षय तृतीयामें त्रेता, माघकी मौनी अमावस्यामें द्वापर और भाद्रमासके कृष्णपक्षकी त्रयोदशीमें कलियुगका आरम्भ हुआ-ये युगादि तिथियाँ कहलाती हैं, इनमें दानका फल अक्षय है), उससे सौ गुना सूर्यक दक्षिणायन और उत्तरायण होनेपर अर्थात् अयन तिथियोंमें, उससे सौ गुना चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण कालमें और उससे सौ गुना व्यतिपातयोगमें दानका अधिक फल है। यद्यपि पुण्यकी दृष्टिसे शास्त्रने यह व्यवस्था प्रदान की है, परंतु कुछ ऐसे दान हैं, जिनमें कालकी अथवा मुहूर्तकी प्रतीक्षा नहीं की जा सकती। यथा- मृत्युके समयका दान-मृत्यु आनेपर तत्काल अन्तिम समयका दान (दसमहादान, अष्टमहादान, पंचधेनु-ऋणापनोद, पापापनोद, उत्क्रान्तिधेनु, वैतरणीधेनु तथा मोक्षधेनु) करनेकी विधि है। इसी प्रकार मृत्युके उपरान्त पिण्डदान तथा शय्या आदिका दान भी समयपर ही करना होता है।

अन्नदान तथा जलदानकी भी कोई समय-सीमा नहीं है। किसी भी समय आवश्यकतानुसार याचक व्यक्तिके उपस्थित होनेपर इसे तत्काल करना चाहिये।

पात्र- शास्त्रोंमें देश और कालकी तरह पात्रका भी विचार किया गया है। सत्पात्रको दिया गया दान ही सफल और सात्त्विक दान है। महर्षि याज्ञवल्क्यका मत है कि दानके लिये अन्य वर्णोंकी अपेक्षा ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं। उनमें भी जो कर्मनिष्ठ ब्राह्मण हैं वे श्रेष्ठतर हैं, उन कर्मनिष्ठोंमें भी विद्या तथा तपस्यासे युक्त ब्रह्मतत्त्ववेत्ता श्रेष्ठतम हैं। जो ब्राह्मण विद्वान्, धर्मनिष्ठ, तपस्वी, सत्यवादी, संयमी, ध्यानी और जितेन्द्रिय हों; मुख्यरूपसे वे ही दानके लिये सत्पात्र हैं, परंतु इसके साथ ही उत्तरोत्तर सद्गुणोंसे युक्त, सच्चरित्र, अभावग्रस्त जो उपलब्ध हों, उन ब्राह्मणोंको सत्पात्र मानकर दान करना श्रेयस्कर है।

शास्त्रोंमें तो यहाँतक लिखा है- **'अपात्रे दीयते दानं दातारं नरकं नयेत्'** अर्थात् कुपात्रको दिया हुआ दान दाताको नरकमें ले जाता है, इसलिये दान देते हुए दानीको सतर्क और सजग रहना चाहिये।

सात्त्विक, राजस और तामस दानके लक्षण

गीतामें भगवान्‌ने तीन प्रकारके दानोंका वर्णन किया है, देश-काल और पात्रको ध्यानमें रखतें हुए प्रत्युपकार न करनेवाले व्यक्तिको निःस्वार्थ भावसे जो दान किया जाता है, वह दान सात्विक दान कहा गया है।१

जो दान क्लेशपूर्वक (जैसे चन्दे-चिट्ठेमें विवश होकर देना पड़ता है), प्रत्युपकारके प्रयोजनसे (अर्थात् दानके बदलेमें अपना सांसारिक कार्य सिद्ध करनेकी आशासे), फलको दृष्टिमें रखकर (मान-बड़ाई, प्रतिष्ठा और स्वर्गादिकी प्राप्तिके लिये अथवा रोगादिकी निवृत्तिके लिये) दिये जाते हैं, उन दानोंको राजसदान कहा गया है।२

जो दान बिना श्रद्धाके, असत्कारपूर्वक अथवा तिरस्कारपूर्वक अयोग्य देश-कालमें कुपात्र (मद्य-मांस आदि अभक्ष्य वस्तुओंको खानेवाले, जुआ खेलनेवाले, दुर्व्यसनोंसे युक्त, चोरी-जारी, आदि नीच कर्म करनेवाले दुश्चरित्र)-के प्रति दिया जाता है, उस दानको तामस कहा गया है।३

वर्तमान काल में गोसेवा हेतु दिया गया दान सबसे ऊँचा और सर्वश्रेष्ठ दान है।

गोघृतमाहात्म्यम्

पं.गङ्गाधरजी पाठक श्रीधाम वृन्दावन

वेदादि शास्त्रों में घृत के बारे में बहुत कुछ कहा गया है यथा- **'घृतं वै देवानामन्नम्'**

आदि में घृत को देवताओं का अन्न और प्राणिमात्र का जीवन बताया गया है । श्रीमद्भागवत में जब देवाप्सरा उर्वशी शापवश मनुष्यलोक में पुरूरवा के घर पहुँची तब भोजन के लिये पूछने पर उसने कहा-

'घृतं मे वीर ! भक्ष्यं स्यात्' (9।14।22) ।

हे वीर मेरा भक्ष्य घृत हो ।'घृतस्य स्तोकं सकृदद्ध आश्नाम्' (ऋ०10।95।16), 'घृतस्य स्तोकग्गूं सकृदद्ध आश्नाम्' (शतपथ० 11।5।1।10)

इस मन्त्र और ब्राह्मणभाग में दोनों जगह कहने वाली ऋषिका उर्वशी ही है । इसी कारण देवयज्ञ-होम में भी शुद्ध गोघृत का ही विधान उपलब्ध होता है और देवता इसी से सन्तुष्ट होते हैं; यथा-

यो वा देवा घृतस्नुना हव्येन प्रतिभूषति ।
तं विश्व उप गच्छत ।। (ऋ० 6।52।8)

अर्थात्- हे देवताओ! जो घी टपकाने वाले हविर्भाग से तुम्हारा सत्कार करता है, उसके समीप जाओ । पुनः-

'त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ आदित्याँ उत ।
यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् ।।' (ऋ० 1।45।1)

हे अग्ने ! तू इस यज्ञ में वसु, रुद्र, आदित्य और घी से प्लुत आहुतियाँ देने वाले तथा उत्तम यज्ञ करने वाले मानव का सत्कार कर । आदि अनेक मन्त्रों में घृतका माहात्म्य बताया गया है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी -

'रस्याः स्निग्धाः (घृतपक्वाः) स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः' (17।8)

घृतपक्व स्निग्ध आहार को तमोगुणहन्ता सात्त्विक कहा गया है । वेद का पाठ करने वालों के लिये सात्त्विक मेधा एवं विधिवत् सस्वर उच्चारण हेतु घृतयुक्त मधुर भोज्य पदार्थ का ग्रहण अनिवार्य बताया गया है; जैसे- **'भोजनं मधुरग्गुँ स्निग्धम्', मधुररसप्रायं घृतप्रायं चान्नं भुञ्जीत' (शु०य०प्राति० 1।25)।**

वेदों में अखण्ड सौभाग्य एवं धन, पुत्र, आरोग्य आदि की प्राप्ति के हेतु पतिव्रता सौभाग्यवती स्त्रियों के लिये गोघृत से बने हुये काजल को लगाने का विधान बताया गया है; यथा-

इमा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा सं विशन्तु ।
अनश्रवोऽनमीवाः सुरत्ना आ रोहन्तु जनयो योनिमग्रे ।।
(ऋ० 10।18।7)

अर्थात्- ये श्रेष्ठ पत्नियाँ वैधव्य-दोष से रहित होकर घी का काजल आँखों में आँझ कर एकत्र बैठ जायँ । पुत्रों को जन्म देनेवाली ये नारियाँ अश्रुहीन एवं नीरोग होकर अच्छे रत्न धारण किये यज्ञ में पहले ही बैठ जायँ । इससे नेत्रज्योति में भी वृद्धि होती है। भक्ष्यभक्षणजन्य या अस्पृश्यस्पर्शनजन्य अपनी अशुद्धि हो जाने पर स्मृतियों में घृतप्राशन से शुद्धि मानी गयी है- 'घृतं प्राश्य विशुद्ध्यति' (मनु० 5।103) ।

घृत विष को भी नष्ट करता है । सर्पदंश वालों को विष हटाने के लिये गोघृत पिलाने का विधान है । छोटे बच्चे को जातकर्म संस्कार में विषदूरीकरण पूर्वक सुष्ठु स्वर और विशिष्ट मेधा की उत्पत्ति के लिये सुवर्ण शलाका से मधु और गोघृत या केवल गोघृत ही चटाया जाता है । अन्नस्थ दोष को दूर करने के लिये रोटी आदि भोज्य पदार्थो में घृत देने

का विधान है । घृतपक्व बासी अन्न भी शुद्ध ही माना जाता है; जैसे –

'यत्किञ्चित्स्नेहसंयुक्तं भोज्यं भोज्यमगर्हितम् ।
तत्पर्युषितमप्याद्यं हविःशेषं च यद् भवेत् ।।(मनु०5।4)

इससे घृतयुक्त अन्न की शुद्धता सिद्ध हो जाती है । शीतला आदि के अवसर पर घृतपक्व पर्युषित भोजन का उपयोग भी सकारण होता है । ग्रहण के समय में रखा हुआ घृतपक्व मिष्टान्न भी इसी कारण अशुद्ध नहीं माना जाता । कारण यह है कि घृत गौ से उत्पन्न हुये दुग्ध का सार है । सार-वस्तु लाभदायक, श्रेष्ठ और बलप्रद होती है ।

पुनः वेदादि शास्त्रों के अनुसार गौ में सभी देवताओं का निवास तथा गौ की सात्त्विकता मानी गयी है । इसीलिये तो महापापों के प्रायश्चित्तों एवं अशुद्ध की शुद्धि में पञ्चगव्य का उपयोग अनिवार्य माना जाता है । पञ्चगव्य में घृत की श्रेष्ठता प्रसिद्ध है । घृत पर कीटाणुओं का आक्रमण सफल नहीं होता । इसलिये ग्रहण के अवसर पर जल से निर्मित अन्न को शीघ्र दूषित एवं विकृत कर देने वाले कीटाणुओं के फैल जाने से वह अन्न त्याज्य हो जाता है, पर घृतसंस्कृत अन्न में दूषित कीटाणुओं का प्रभाव नहीं पड़ने से उसे अशुद्ध नहीं माना जाता है

दूध से जल के भाग को दूर करने के लिये उसे जमाकर दही बनाया जाता है, दही से जल के भाग को दूर करके मक्खन और उसके भी बचे-खुचे जल को अग्नि के द्वारा जलाकर समाप्त कर दिया जाता है इसके बाद अवशिष्ट सार भाग परम विशुद्ध घृत बन जाता है । इसीलिये सद्योजात बालक के भी अशुद्ध होने से उसकी शुद्धि के लिये जातकर्म संस्कार में घृतप्राशन कराया जाता है-

'अनामिकया सुवर्णान्तर्हितया मधुघृते प्राशयति घृतं वा' (पार०1।16।4)।

परन्तु घृत की शुद्धि का होना अनिवार्य है । घृत की शुद्धि से हमारी वाणी, शरीर और मन की पुष्टि होती है ।

छान्दोग्योपनिषद् के अनुसार उद्दालक और श्वेतकेतु के संवाद में घृत के स्थूल भाग से अस्थि, मध्यम से मज्जा और सूक्ष्म से वाणी बनने की बात कही गयी है । अस्थि शरीर का मूल है, मज्जा बल का और वाणी सारे संसार के व्यवहार का मूल है । घृत को आयुर्वर्द्धक कहा गया है- 'आयुर्वै घृतम्' (तैत्ति०सं०-2।3।2।2) ।

गोघृत से दीपक जलाना अत्यन्त लाभप्रद है । इसके निकट बैठकर की हुई उपासना विशेष फलवती होती है । कई दूषित कीटाणु इससे नष्ट हो जाते हैं । रखे हुए मृतक शरीर से निकले रोग के परमाणु आदि घृतलेपन से नष्ट हो जाते हैं । जिस घर में गोघृत से दीपक नहीं जलता उस घर में भूत-प्रेत का निवास माना जाता है । सम्पूर्ण देव-पितृ आदि कर्मो में हव्य और कव्य आदि में घृत का संयोग अनिवार्य है, परन्तु देवताओं और पितरों के निमित्त बाजारू दूषित घृत आदि देकर उन्हें ठगना नहीं चाहिये । स्वयं के भोजन में भोजन प्रारम्भ करने के पूर्व ही घृत लेना चाहिये, उच्छिष्ट में घृत लेना और देना मनु के अनुसार- 'न चोच्छिष्टे घृतं दद्यात्' अथवा 'न चोच्छिष्टे घृतमद्यात्'

इन वाक्यों से अत्यन्त दोषकारक बताया गया है ।

पुनः - 'न चोच्छिष्टं क्वचिद्दद्यात्' इस मनुवाक्य के अनुसार किसी को भी अपना उच्छिष्ट यानी जूठा भोजन नहीं देना चाहिये ।

विदेशी नस्ल की गायों के गव्य पदार्थ में यथोक्त गुण का अभाव होने से सदैव भारतीय नस्ल की गौ के गव्यपदार्थ का सेवन करना ही परम श्रेयस्कर माना गया है । वर्त्तमान में शुद्ध दुग्ध, घृत आदि की कमी के कारण ही आज-कल की भारतीय सन्तानें अल्पजीवी, क्षुद्रकाय, हतवीर्य और निर्बल हो रही हैं । हिन्दु मात्र का ही नहीं, बल्कि मानव मात्र का यह सर्वप्रथम कर्त्तव्य है कि वह गोवंश की रक्षा और उसकी वृद्धि के लिये सतत प्रयत्नशील रहे । यथा –

संस्था समाचार

परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के फरवरी माह प्रवास का संक्षिप्त विवरण :-

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज लगभग पिछले दो माह से तप-साधना एवं स्वास्थ्य लाभ हेतु गोधाम पथमेड़ा में एकान्तवास में विराजते रहे। फरवरी के पहले सप्ताह में श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज गोपूजन, गोपरिक्रमा एवं प्रत्यक्ष स्वयं के हाथों से गोसेवा करते हुए पुनः गोभक्तों-गोसेवकों को सार्वजनिक गोसेवार्थ मार्गदर्शन एवं आशीर्वचन हेतु बाहर पधारने लगे।

4 फरवरी को राष्ट्रीय कामधेनु कल्याण परिवार गोधाम पथमेड़ा के वरिष्ठ गोभक्तों-गोसेवकों ने श्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराज के दर्शन कर आशीर्वचन प्राप्त किया। उसी दिन गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज , प.पू. मलूकपीठाधीश्वर श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज, प. पू. श्रीसागरिया बाबा, बालव्यास परम गोवत्स प.पू. श्रीराधाकृष्णजी महाराज आदि संतवृंदों सहित के सानिध्य में वरिष्ठ गोभक्तों-गोसवेकों की विशेष बैठक हुई।

बैठक में घास-चारा की लगातार बढ़ती मंहगाई एवं अनुपलब्धता, लगभग पिछले दो वर्षों से सरकार द्वारा राज्य की गोशालाओं को किसी भी प्रकार का अनुदान आदि नहीं मिलने, गोशालाओं के आर्थिक एवं व्यवस्थागत प्रबन्धन, गो-महिमा के राष्ट्रव्यापी प्रचार-प्रसार तथा ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा पर विस्तार से विचार-विमर्श हुआ। श्रीमनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगांव में औषधिय एवं जैविक खेती, क्षैत्र में गोपालन-गोसंवर्धन तथा पंचगव्य परिष्करण व विनियोग के राष्ट्रव्यापी किए जा सकने वाले कार्यों पर भी गम्भीर चिंतन हुआ। 14 फरवरी तक परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज गोधाम पथमेड़ा, श्रीमनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगांव तथा गोलासन गोशाला आदि विभिन्न गोशालाओं का अवलोकन करने पधारे।

15 फरवरी को परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ब्रह्मधाम आसोतरा में **''ब्रह्मर्षि श्रीखोतेश्वर जन्मशताब्दी महामहोत्सव''** की तैयारियों का अवलोकन करते हुए **''ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा''** में पावन सानिध्य प्रदान करने हेतु वृन्दावन पधारे। जयपुर में सैकड़ों गोभक्तों-गोसेवकों ने रत्नावली गो-कृषि फार्म हाउस पर गोऋषि श्रद्धेय श्रीस्वामीजी महाराज के दर्शन कर आशीर्वचन लाभ प्राप्त किया।

अगले दिन जयपुर में प.पू श्रीस्वामीजी महाराज के कर कमलों से सरकारी कर्मचारी-अधिकारियों से लघु एवं सुक्ष्म गोग्रास संकलन की बैंकिंग योजना के कार्यालय का उदघाटन हुआ। गोग्रास का महत्व तथा छोटे-छोटे स्वरूप में समाज का प्रत्येक वर्ग विशेषकर नौकरी-पेशा वाले कर्मचारी व अधिकारियों के प्रतिमाह सीधा वेतन में से बैंक द्वारा गोग्रास प्रदान करने के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहन देना इस नव कार्यालय का मुख्य उद्देश्य है।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज 18 फरवरी को **''ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा''** में शामिल हुए, जहाँ हजारों भक्त-भाविकों एवं प.पू. सैकड़ों संतवृंदों ने भव्य स्वागत किया। 23–24 फरवरी को गो-यात्रा के ''ब्रज गो-अभ्यारण्य, जड़खोर'' में दो दिवसीय ठहराव पर देश भर से गोभक्त-गोसेवक ऊमड़ पड़े।

परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज जयपुर होते हुए 26 फरवरी को नन्दगांव पध

ाारे। 27 फरवरी को गोधाम पथमेड़ा तथा श्रीखेतेश्वर गोशालाश्रम, खिरोड़ी पधारकर गोसेवाश्रमों का अवलोकन किया। 27 फरवरी दोपहर से 28 फरवरी दोपहर तक ब्रह्मर्षि ब्रह्मांशावतार श्रीखेतारामजी महाराज के जन्मशताब्दी महामहोत्सव के उपलक्ष में रखे गए **''श्रीखेतेश्वर ब्रह्मज्योति रथयात्रा''** के दो दिवसीय कार्यक्रम में पधारे। बह्मर्षि ब्रह्माचार्य प.पू. श्रीतुलछारामजी महाराज एवं गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज के स्नेहयुक्त मिलन तथा सानिध्य का हजारों-हजारों भक्त-भाविकों ने सत्संग रूपी पुण्य लाभ अर्जित किया।

''श्रीखेतेश्वर ब्रह्मज्योति रथयात्रा'' के लिए पावन भूमि बिजरोल खेड़ा में वैदिक नीति-रीति से अग्नि प्रज्जवलन एवं गायत्री यज्ञ में दोनों महापुरूषों की साथ-साथ उपस्थिति रही।

शिक्षा आवश्यक परन्तु संस्कार तथा भाव, मन व शरीर की स्वस्थता सबसे पहले आवश्यक- गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज

28 फरवरी को राजपुरोहित समाज सम्मेलन की विशाल सभा को उद्‌बोधन देते हुए गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने ब्राह्मण के आचार-विचार, नीति-धर्म और कर्तव्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि मानव देह मिलने और भारतभूमि पर ब्राह्मण कुल में जन्म के बाद ब्राह्मणों पर सम्पूर्ण प्रकृति और मानव जाति के कल्याण का दायित्व आ जाता है। अतः राजपुरोहित समाज को अर्थात प्रत्येक ब्राह्मण को अपने ब्रह्मतत्व को तेजयुक्त करना होगा।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने कहा कि समाज में शिक्षा का विशेष महत्व है परन्तु शिक्षा से भी पहले माँ-बाप की गोद एवं घर के आंगन से ही बाल्यकाल में दीक्षा रूपी शुद्ध आचार-विचार, आहार-विहार एवं श्रेष्ठ सोच व दृष्टि तथा अच्छा स्वास्थ्य मिलना जरूरी है। यदि संस्कार नहीं होंगे तो व्यक्ति भाव, मन एवं शरीर से स्वस्थ नहीं होगा और संस्कार व स्वास्थ्य से वंचित व्यक्ति शिक्षित होकर भी किसी का भला नहीं कर सकता है।

गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज ने स्पष्ट किया कि संस्कार वहीन तथा तन, मन व भाव से अस्वस्थ शिक्षित ही वर्तमान में पूरे विश्व में मानव अहितकारी कार्य कर रहे हैं। भ्रष्टाचार, आंतकवाद, युद्ध आदि समस्याएँ शिक्षित लोगों की ही पैदा की हुई है तथा वो ही इनका नेतृत्व कर रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि विवेक सम्मत संस्कार तथा भाव, मन व शरीर से स्वस्थतायुक्त होकर शिक्षित होने से ही समाज एवं प्रकृति के लिए व्यक्ति हितकर हो सकता है।

परम श्रद्धेय श्री स्वामीजी महाराज के मार्च माह के संभावित संक्षिप्त प्रवासः-

परम श्रद्धेय गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज 29 फरवरी को पुना महाराष्ट्र पधारेंगे। 1 मार्च को पुना सहित महाराष्ट्र के वरिष्ठ गोभक्तों-गोसेवकों की बैठक को आशीर्वाद प्रदान करेंगे। उल्लेखनीय है कि पुना के सभी गोभक्त भाविकों का आग्रह है कि गोसेवा हेतु पुना में विशेष कथा अथवा नानी बायी का मायरा कार्यक्रम रखा जावें, जिस पर पूज्यश्री की निश्रा में निर्णय होने की सम्भावना है।

2 मार्च को गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराज हैदराबाद पधारेंगे। वहाँ 2 से 4 फरवरी,2012 तक बालव्यास परम गोवत्स श्रीराधाकृष्णजी महाराज के श्रीमुख से निराश्रित गोवंश की रक्षा एवं सेवा हेतु **''श्री गोपाल फाग महोत्सव''** में पूज्यश्री का पावन सान्निध्य रहेगा। 5 से 11 मार्च तक **''श्रीब्रज चौरासी कोस गोयात्रा''** में पुनः पधारेंगे तथा अन्य कार्यक्रमों में भाग लेते हुए 15 मार्च, 2012 तक गोधाम पथमेड़ा पधारने का सम्भावित कार्यक्रम है।

''श्री ब्रज चौरासी कोस गो-यात्रा'' अदभुत, अनुपम एवं अभूतपूर्व स्वरूप में जारी:- ब्रज क्षैत्रवासी गोमाताओं, राष्ट्र के शीर्षस्थ संतवृंदों के संग 5 हजार भक्त-भाविकों का कर रहे हैं स्वागत।

9 फरवरी, 2012 से प्रारम्भ हुई **''ब्रज चैरासी कोस गो-यात्रा''** पूज्या 51 गोमाताओं के एवं देश के शीर्षस्थ महान एवं दिव्य संतवृंदों के सानिध्य में यात्रा श्रीधाम वृंदावन से लोहवन, गोकुल, मथुरा, मधुवन, चन्द्र सरोवर, जतीपुरा गोवर्धन, डीग, ब्रज गोअभ्यारण्य जड़खोर, आदिबद्री, केदारनाथ क्षैत्रों से होते हुए 29 फरवरी को कामवन पहुंच चुकी है। 10 मार्च, 2012 को वृन्दावन में गो-यात्रा का समापन होगा।

''ब्रज चौरासी कौस गो-यात्रा'' अपने आप में सम्पूर्ण राष्ट्र एवं सनातन प्रेमियों के लिए ही नहीं अपितु सदैव ब्रज चौरासी यात्राओं के प्रत्यक्षदर्शी रहने वाले ब्रज क्षैत्रवासियों के लिए भी अदभुत,अनुपम एवं अभूतपूर्व है। यात्रा में 5 हजार से अधिक संतवृंद, साधक तथा परिवारजन गोभक्त विधिवत पंजीयन के साथ शामिल हैं। सबसे आगे कामधेनु स्वरूपा 51 शृंगारित साक्षात गोमाताएँ चल रही है। बृजवासी जनसाधारण यात्रा का विभिन्न स्थानों पर स्वागत-अभिनन्दन कर गोमाताओं का पूजन कर रहे हैं।

गो-यात्रा में सैकड़ों विदेशी भक्त-भाविक भी शामिल हैं। इतनी विशाल संख्या तथा गोमाताओं का साथ होना ब्रज क्षेत्रवासीयों के ही शब्दों में अभूतपूर्व ही नहीं **''भूतो न भविष्यति''** जैसी अनुभूति बतायी जा रही है। यात्रा में प्रतिदिन नित नया सुव्यवस्थित पड़ाव पर भोजन-प्रसाद, आवास, दैनिक सुविधाएँ आदि को अब तक अनेक यात्राओं में भाग ले चुके श्रद्धालुजन अत्यन्त ही उच्चकोटि की बता रहे हैं।

गो-यात्रा के सभी पड़ावों (ठहराव स्थलों) पर गोमहिमा युक्त सत्संग, संगोष्ठियों और गोगव्यों (दूध, दही, गोघृत, गोमूत्र एवं गोमय) की महत्ता, उपादेयता एवं प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला जाता है। हजारों यात्रियों के साथ-साथ हजारों क्षेत्रवासी भी पंचगव्य प्रयोग एवं गोव्रत का संकल्प ले रहे हैं। ब्रज गो-यात्रा में भोजन-प्रसाद में गोघृत एवं गोदुग्ध उत्पादों का ही प्रयोग हो रहा है।

प्रातः ५ बजे से यात्रा प्रतिदिन प्रारम्भ होने से पूर्व गो-आरती और प्रार्थना होती है। यात्रा के समय मधुर वाधयंत्रों एवं यात्रियों के भावयुक्त समर्पित वाणी से आसमान को सात्विक गुंजायमान करती हुई सत्संग ध्वनी तथा आगे चलती गोमाताओं के पैरों से उड रही गोरज से निरन्तर गोधुलि की अनुभुति प्रदान होती है।

यात्रा के मध्य में 18 फरवरी से 25 फरवरी तक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज का पावन सानिध्य पाकर श्रीब्रज चौरासी कोस गोयात्री धन्य-धन्य महसूस करते हुए अद्भुत उत्साह और स्फुर्ति से भर गए। 23–24 फरवरी को गोधाम पथमेड़ा के ही ब्रज में विशेष प्रकल्प ''ब्रज गोअभ्यारण्य, जड़खोर'' में यात्रा का दो दिवसीय ठहराव रहा। इस दौरान गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज, मलूक पीठाधीश्वर प.पू. श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज, महामंडलेश्वर प.पू. कार्ष्णि श्रीगुरूशरणानन्दजी महाराज,प.पू. श्रीज्ञानानंदजी महाराज, बालव्यास परम गोवत्स श्रीराधाकृष्णजी महाराज आदि संतवृदों की उपस्थिति में गोरक्षा-गोसेवा का आहवान हुआ। ब्रज गोअभ्यारण्य, जड़खोर में देश भर से गोभक्त-गोसेवक पहँचे तथा संतों के सानिध्य

में प्रत्यक्ष गोसेवा में भाग लिया।

पंच महाभुतों का शुद्धिकरण गोमाता द्वारा ही सम्भव -गोऋषि श्रीस्वामीजी महाराजः-

परम श्रदेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज ने आशीर्वचन में कहा कि पूर्ण निरोगता सात्विक जीवनी शक्ति से सम्पन्न आहार पर निर्भर हैं और सात्विक जीवनी ऊर्जा से पूर्ण आहार की प्राप्ति गोमाता पर निर्भर है। गाय ही पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन तथा आकाशादि तत्वों में सात्विक जीवनी शक्ति का संचार करती है। प्रत्यक्ष में प्राणी हवा, पानी तथा अन्नादि के रूप में आहार ग्रहण करके अपना पोषण करता है। पूज्या गोमाता इन तीनों को पोषित करती है अर्थात पृथ्वी पर विचरण करती हुई पूज्या गोमाता पृथ्वी सहित पंच महाभूतों को गोमय, गोमूत्र, गोघृत, स्पर्श तथा हुँकार से पोषण प्रदान करती हैं पृथ्वी माता का सात्विक आहार गोमय, गोमूत्र है। इसी गोमय आहार को ग्रहण करके पृथ्वी माता अन्न, फल, सब्जी व औषधि आदि के रूप में सत्व सम्पन्न स्वस्थ पदार्थ प्रदान करती हैं।

मानव जाति गोमाता की सदैव कृतज्ञ -श्रीमंहत द्वाराचार्य राजेन्द्रदासजी महाराज

मलूकपीठाधीश्वर परम पूज्य श्रीराजेन्द्रदासजी महाराज ने आशीर्वचन में कहा कि भगवान श्रीकृष्ण की नित्यलीला स्थल ब्रज क्षेत्र में ही गोमाता की सेवा , गोरक्षा और गोपालन, गोसंवर्धन की स्थापना जरूरी है। अतः निकटवर्ती दिल्ली, राजस्थान, हरियाणा, उ.प्र.के गोभक्तों-गोसेवकों को एकता के साथ **''ब्रज गोअभ्यारण्य, जड़खोर''** को केन्द्र बनाकर सम्पूर्ण गोवंश की रक्षा एवं सेवा के साथ-साथ गोपालन संस्कृति के पुनर्निर्माण में जूटना होगा।

परम पूज्य श्रीद्वाराचार्यजी महाराज ने कहा कि गाय 68 करोड़ तीर्थों व ३३ करोड़ देवताओं का चलता फिरता मन्दिर-विग्रह है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर गाय का जो उपकार है उसके वर्णन नहीं किया जा सकता।

गाय के प्रति हम कृतज्ञ हो, यही सनातन धर्म है। हमारी सामान्य सेवा से गाय कृतज्ञ होती है। यत्किंचित् गाय की सेवा बन जाए उससे गोमाता इतनी सन्तुष्ट होती है, इतनी कृपा करती है कि वे अपने सेवक के प्रति सदा कृतज्ञ रहती है।

गोधाम पथमेड़ा में नवनर्मित मुख्य कार्यालय का लोकार्पण

४ फरवरी, २०१२ को गोधाम महातीर्थ आनन्दवन पथमेड़ा के समस्त लेखा-जोखा एवं प्रबन्धन हेतु नवनिर्मित मुख्य कार्यालय का शुभारम्भ प.पू. संतवृंदों के करकमलों से पूज्या गोमाता के प्रथम प्रवेश के साथ सम्पन्न हुआ।

बालव्यास परम गोवत्स श्रीराधाकृष्णजी महाराज, आचार्य पंडित पुखराजजी द्विवेदी, डॉ.ललितजी द्विवेदी एवं वरिष्ठ आई पी एस श्रीसुरेशजी राजपुरोहित ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ ऑफिस का पूजन किया। परम पूज्य सर्वश्री ब्रह्मचारी श्री गोविन्दवल्लभजी महाराज, श्री सुमन सुलभजी महाराज, श्रीमनसुखजी महाराज, श्रीदीनदयालजी महाराज, संस्था के महामंत्री श्रीश्रवणसिंहजी राव, कोषाध्यक्ष श्रीहरिशंकरजी राजपुरोहित, व्यवस्थापक श्री जानकी प्रसाद गुप्ता, प्रवक्ता श्री पूनम राजपुरोहित ''मानवताधर्मी'', बाड़मेर शाखा के वरिष्ठ गोभक्त श्री आलोक सिंघल आदि वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने पूजन में भाग लिया।

सूरत मे पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पादों का वितरण केन्द्र का शुभारम्भ

3 फरवरी,2012 को गोधाम पथमेड़ा की प्रेरणा से स्थापित विशेष प्रकल्प श्रीपृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पाद प्रा.लि. के गोदुग्ध उत्पादों एवं

पंचगव्य ओषधियों के वितरण केन्द्र का सूरत में अर्जुन काम्पलेक्स, भटार रोड़ पर बालव्यास परम गोवत्स श्रीराधाकृष्णजी महाराज के कर कमलों से उद्घाटन हुआ। यहाँ गोदुग्ध, छाछ, पनीर, रसगुल्ले और पंचगव्य औषधियों सहित गव्य निर्मित विभिन्न दैनिक उपयोगी वस्तुएँ उपलब्ध रहेगी।

इस अवसर पर पृथ्वीमेड़ा उत्पाद प्रा. लि. के निदेशक श्रीश्यामसुन्दरजी, श्रीजगदीशजी परिहार, श्रीश्यामजी राठी, श्रीरामनारायणजी चाण्डक, श्रीप्रेमनारायणजी राठी, श्रीद्वारकाप्रसादजी मारू, श्रीतुलसी भाईजी राजपुरोहित आदि सैकड़ों गोभक्त उपस्थित थे। रात्रि 8 बजे से श्रीमहेश्वरी भवन, सिटीलाईट, सूरत में प.पू. बालव्यास श्रीराधाकृष्णजी महाराज के मुखारविन्द से गो-सत्संग एवं भजन संध्या में सैकड़ों गोभक्त नर-नारी एवं बच्चों ने भक्तिरस का श्रवण किया।

बाड़मेर एवं नून में नानी बायी के मायरे की तैयारियाँ जोर-शोर से

अनाश्रित-निराश्रित गोवंश की सेवा हेतु परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज की पावन निश्रा एवं परम गोवत्स प. पू. बालव्यास श्रीराधाकृष्णजी महाराज के मुखाविन्द से 1 से 3 अप्रेल, 2012 को श्रीगोपाल गोवर्धन गोशाला, पथमेड़ा शाखा बाड़मेर गोसेवा समिति की और से आयोजित ''नानी बाई का मायरा''। कार्यक्रम की तैयारियाँ जोर-शोर से जारी है।

वहीं 8 से 10 मई, 2012 गोसेवा समिति, नून (जालोर) द्वारा आयोजित ''नानी बाई का मायरा'' निश्चित हो चुका है। इन कार्यक्रमों को लेकर गोसेवकों-गोभक्तों में उत्साह के समाचार मिल रहे है। इन गोसेवार्थ आयोजनों में तन-मन-धन से सभी धर्मपरायण भक्त-भाविकों से निवेदन है कि बढ़-चढ़कर भाग लें एवं कामधेनु कृपा पात्र बनकर पुण्य अर्जित करें।

गो साहित्य सृजन हेतु विशेष निवेदनः- गो-लोकदेवताओं एवं अनुकरणीय गोभक्तों-गोसेवकों की जानकारी भेजें।

समस्त गोसेवक-गोभक्त पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आपके जिला, तहसील, पंचायत एवं गांव क्षैत्र में गोसेवा-गोरक्षा से जुड़े श्रेष्ठ एवं प्रेरणादायी गोरक्षक लोक देवताओं तथा देवात्माओं जैसे कि झूंझार, भोमीया आदि की पूरी गोसेवार्थ-गोरक्षार्थ जीवन चरित्र (जीवनी) एवं चित्र आदि सामग्री भेजें।

राजस्थान सहित भारतवर्ष की पावन धरा गोसेवा एवं गोभक्ति भाव से सदैव ओत-प्रोत रही हैं। सर्वत्र ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपने जीवन को गोसेवा-गोरक्षा में सम्पूर्ण रूपसे न्यौछावर कर दिया। समाज के लिये ऐसे प्रेरणादायी गोसेवकों-गोरक्षकों की सम्पूर्ण जानकारी देश के लाखों-करोड़ों गोप्रेमियों को प्रमाणिक रूप से संग्रहित होकर उपलब्ध हो सके, ऐसा प्रयास है। इस हेतु शीघ्र ही समग्र साहित्य जिसमें गो-लोक देवताओं, गो-परम्पराओं एवं गोसेवा व गोरक्षा सम्बन्धित समस्त विशेष ऐतिहासिक एवं वर्तमान के व्यक्तित्वों पर साहित्य सृजन किया जा रहा है।

उपरोक्त सम्बन्ध में शीघ्रातिशीघ्र पत्र, ईमेल या फेक्स द्वारा प्रमाणिक जानकारी प्रेषित करें। अपने आस-पास से और स्वयं के जीवन में गोरक्षा-गोसेवा सबन्धित श्रेष्ठ अनुभव एवं चमत्कारिक अनुभुतियाँ को भी भेजें। सम्पर्कः- 9414154706, टेली. फेक्स - 02979 -287122 ई मेल. k.k.p.pathmeda@gmail.com

व्रत-पर्वोत्सव

शीतलाष्टमी

(चैत्र कृष्ण अष्टमी)

यह व्रत चैत्र कृष्ण अष्टमी या चैत्रमास के प्रथम पक्षमें होलीके बाद पड़नेवाले पहले सोमवार अथवा गुरुवारको किया जाता है। इस व्रतके करने से व्रतीके कुलमें दाहज्वर, पीतज्वर, विस्फोटक, दुर्गन्धयुक्त फोड़े, नेत्रोंके समस्त रोग, शीतलाकी फुंसियोंके चिह्न तथा शीतलाजनित दोष दूर हो जाते हैं। इस व्रतके करनेसे शीतलादेवी प्रसन्न होती हैं। शीतलादेवीके स्वरूपका 'शीतलादेवी' में इस प्रकार वर्णन किया गया है।

वन्देऽहं शीतलां देवीं रासभस्थां दिगम्बराम्।
मार्जनीकलशोपेतां शूर्पालङ्कृतमस्तकाम्।।

व्रतकी विधि- अष्टमीव्रत करनेवाले व्रतीको पूर्वविद्धा अष्टमी तिथि ग्रहण करनी चाहिये। इस दिन प्रातःकाल शीतलजलसे स्नानकर निम्नलिखित संकल्प करना चाहिये।

मम गेहे
शीतलारोगजनितोद्रवप्रशमनपूर्वकायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धये
शीतलाष्टमीमीव्रतमहं करिष्ये।

इस व्रतकी विशेषता है कि इसमें शीतलादेवीकी भोग लगानेवाले सभी पदार्थ एक दिन पूर्व ही बना लिये जाते हैं अर्थात् शीतलामाताको एक दिनका बासी भोग लगाया जाता है। इसलिये लोकमें यह व्रत बसौड़ाके नामसे भी प्रसिद्ध है। नैवेद्यके लिये मेवे, मिठाई, पूआ, पूरी, दाल-भात, लपसी आदि एक दिन पहलेसे ही बनाये जाते हैं, जिस दिन व्रत रहता है, उस दिन चूल्हा नहीं जलाया जाता।

इस व्रतमें रसोईघरकी दीवारपर पाँचों अँगुली घीमें डुबोकर छापा लगाया जाता है। उसपर रोली, चावल चढ़ाकर शीतलामाताके गीत गाये जाते हैं। सुगन्धित गन्धपुष्पादिसे शीतलामाताका पूजन कर 'शीतलास्तोत्र' का यथासम्भव पाठ भी करना चाहिये तथा शीतलामाताकी कहानी भी सुननी चाहिये। रात्रिमें दीपक जलाने चाहिये।

एक थालीमें भात, रोटी, दही, चीनी, जलका गिलास रोली, चावल, मूँगकी दालका छिलका, हल्दी, धुपबती तथा मोंठ, बाजरा आदि रखकर घरके सभी सदस्योंको स्पर्श कराकर शीतलामाताके मन्दिरमें चढ़ाना चाहिये। इस दिन चौराहेपर भी जल चढ़ाकर पूजन करनेका विधान है। फिर मोंठ-बाजराका वायना निकालकर उसपर रूपया रखकर अपनी सासजीके चरण-स्पर्शकर उन्हें देनेकी प्रथा है। इसके बाद किसी वृद्धाको भोजन कराकर दक्षिणा देनी चाहिये।

यदि घर-परिवारमें शीतलामाताके कुंडारे भरनेकी प्रथा हो तो एक बड़ा कुंडारा तथा दस छोटे कुंडारे मँगाकर छोटे कुंडारोंको बासी व्यजंनोंसे भरकर बड़े कुंडारेमें रख दे। फिर उसकी हल्दीसे पूजा से पूजा कर ले। इसके बाद सभी कुंडारोंको शीतलामाताके स्थानपर जाकर चढ़ा दे। जाते और आते समय शीतलामाताका गीत भी गाया जाता है।

पुत्रजन्म और विवाहके समय जितने कुंडारे हमेशा भरे जाते हैं उतने और भरने चाहिये।

गोशाला

साभारः गोशाला

(पंचखण्ड पीठाधीश्वर प. पू. आचार्य श्री धर्मेन्द्रजी महाराज)

(223)
मेरा है वह मित्र जिसे प्रिय
लगती है यह गोशाला
वह है पूज्य प्राण दे जिसने
कभी बचायी गोशाला
इस पर हाथ उठाने वाला
मेरा पहला दुश्मन है
ध्येय-बिन्दु मेरे जीवन का एक यही बस
-गोशाला.

(224)
मिट जाएँगे दस्यु लुटेरे
नहीं मिटेगी गोशाला
खप लाएँगे शत्रु हमारे
नहीं खपेगी गोशाला
इसे मिटाना चाहेगा
जब तक मेरे तन में शोणित खुली रहेगी
गोशाला.

(225)
कब तक सुन्दर बनी रहेगी
मोहमयी साकी बाला ?
कब तक टिके रहेंगे कंचन
धन-भण्डार भवन आला?
वसीयतें सब झूठी हैं बस
एक वसीयत सच्ची है
पुत्र ! न तेरे जीवित रहते बन्द कभी हो
गोशाला.

फार्म-४

प्रकाशन का स्थानः-	श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला, पथमेड़ा,पो.हाड़ेत्तर, त.सांचोर,जि.जालोर (राज.)
प्रकाशन की अवधिः-	मासिक
प्रकाशक का नामः-	स्वामी ज्ञानानंद
प्रकाशक का पताः-	श्रीगोपाल गोवर्धन गोशाला, पथमेड़ा,पो.हाड़ेत्तर, त.सांचोर,जि.जालोर (राज.)
क्या भारत के नागरिक है?:-	हाँ
मुद्रक का नामः-	स्वामी ज्ञानानंद
मुद्रक का पता :-	श्रीगोपाल गोवर्धन गोशाला, पथमेड़ा,पो.हाड़ेत्तर, त.सांचोर,जि.जालोर (राज.)
क्या भारत के नागरिक है?:-	हाँ
संपादक का नामः-	स्वामी ज्ञानानंद
संपादक का पताः-	श्रीगोपाल गोवर्धन गोशाला, पथमेड़ा,पो.हाड़ेत्तर, त.सांचोर,जि.जालोर (राज.)
क्या भारत के नागरिक है?:-	हाँ
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझीदार हों।	श्रीगोपाल गोवर्धन गोशाला, पथमेड़ा,

मैं स्वामी ज्ञानानंद एतद्द्वारा यह घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के आधार पर उपरोक्त विवरण सत्य है।

-स्वामी ज्ञानानंद प्रकाशक के हस्ताक्षर

मासिक पत्रिका ''कामधेनु-कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक स्वामी ज्ञानानन्द द्वारा सुभद्रा प्रिंटिंग प्रेस, विश्नोई धर्मशाला के पास, साँचौर (जालोर) से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, पोस्ट-हाड़ेतर, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) से प्रकाशित।

श्रीगोधाम पथमेड़ा द्वारा स्थापित, संचालित एवं प्रेरित गोशाला आश्रमों में संरक्षित गोवंश की संख्या

(1.)वृद्ध तथा कमजोर गायें - 37481 (2.) बीमार एवं विकलांग गायें -11416 (3.)नकार एवं कमजोर नंदी 10122
(4.) बीमार एवं विकलांग नंदी - 11195 (5.) छोटे वृषभ - 9646 (6.) स्वस्थ गायें, बैल एवं नंदी - 18967
(7.) छोटे बड़े बछड़े-बछड़ियाँ - 23633 तथा , वर्तमान में सभी शाखाओं में कुल गोवंश की संख्याः-122450 है।

विशेष नोटः- उपरोक्त लगभग 1 लाख 22 हजार 450 अनाश्रित गोवंश के अतिरिक्त पिछले वर्ष में अकाल से पीड़ित 1 लाख 80 हजार से अधिक निराश्रित गोवंश की प्रदेश के विभिन्न भागों में आपात गोसंरक्षण केन्द्र खोलकर सेवा-सुश्रुषा **जारी रही। बीते** वर्ष अच्छे मानसून के चलते स्वस्थ, गर्भस्थ एवं दुधारू गोवंश को राज्यभर में शिविरों व गोशालाओं से संतवृंदों के आह्वान पर सीधे किसानों को बड़ी संख्या में वितरित किया जा रहा था परन्तु अक्टुबर-नवम्बर 2010, में बेमौसमी अतिवृष्टि ने पूरे राज्य में घास-चारें को सड़ा-गला दिया, फलतः चहुँओर गोशालाओं में गोवंश बढ़ **गया** है। समय से पूर्व ही अकाल की भाँति आयी परिस्थितियों से विवश गोपालक अनुपयोगी गोवंश को निराश्रित छोड़ रहे हैं, जिन्हें भूख-प्यास एवं कसाईयों के क्रूर हाथों से बचाने का कार्य भी प्रदेशभर में पुनः युद्ध स्तर पर करना आवश्यक हो गया है। **जबकि वर्तमान वर्ष में सरकार से किसी भी प्रकार का अनुदान व सहयोग नहीं मिल रहा है।**

-: कार्यालय एवं कार्यकत्ताओं के सम्पर्क सूत्र :-

केन्द्रीय कार्यालय पथमेड़ा (02979) 287102,09 फैक्स 287122 मो. 7742093168, 9414131008, 9413373168, 9414152163
श्री मनोरमा गोलोक महातीर्थ, नंदगांव (02975) 287341,42, 44, 9460717101, टे.फै. 02975-287343, 7742093200
दक्षिणांचल कार्या. बैंगलोर 08022343108 9449052168, 09829101008,09483520101
पश्चिमांचल मुख्यालय मुम्बई 02266393598,9702041008, 9969465325,9920871008

भायन्दर	9819772061,9029519779, 9324525247,9920871008
पूना	9372220347,9326960169,9029519779,9920871008
गोवा	7709587648, 9029519779, 9920871008
सूरत	9825130640, 9909914721, 9374538576, 9825572768, 9426106315, 0261.2369777
वापी	9427127906, 0260-2427475
चैन्नई	9884173998,9952077188,944057448,9445165901,9380570040
हैदराबाद	9440230491,9849007572,9849115851
अहमदाबाद	9426008540,9427320969,9824444049,9925019721,9374541460(079)25320652,
पंजाब	9814036249, 9417155533, 9815468646, 9417380950,9417601223
दिल्ली	9811284207, 9810165260, 9312227141, 9811985292
कोलकत्ता	9903016181, 9339355679
जोधपुर	9414145448,9414136210, 9414177119
अंकलेश्वर	9909946972, 9427101391,9825323694
जयपुर	0141-2299090,9929231144,9829067010, 9001000300, 9413369945
हरियाणा	9416050318, 9812019003,9812307929, 9829598216
भीलवाड़ा	9829045270, 9414113284
बालोतरा	02988-223873,9413503100, 9414107818, 9460889930
बनासकांठा	9426408451,9979565700,9898869898,9427044445,9924941000
बाड़मेर	9413308582, 9414106528, 9414106331

अधिकाधिक गोभक्त मासिक ''कामधेनु-कल्याण'' के 10 वर्षीय आजीवन सदस्य बने। सदस्यता राशि 1100 रूपये का ड्राफ्ट ''कामधेनु प्रकाशन समिति'' के नाम से सम्पादकीय पते पर अथवा बी.ओ.बी शाखा सांचोर में ऑनलाईन खाता संख्या 29450100000326 में भेंजे।

RNI NO. RAJHIN/06/17167 POST REGD NO.RJ/SRO/9638/2012-2014

देशी गोवंश के गव्यों के विनियोग का प्रामाणिक उपक्रम

गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा का विशिष्ठ आयाम

पृथ्वीमेड़ा पंचगव्य उत्पाद प्रा. लि.

गोधाम पथमेड़ा, सांचोर (राज.) 343041 मो. 08003193111, 7742073191, 181
Email:- parthvimeda@gmail.com, Web.s.:- Www.pathmeda.org

Indian cow,s
PURE GHEE . MILLK

गोउत्पादों हेतु सम्पर्क करें

सांचोर - 7742093171, 9414425545
भीनमाल- 9413854449
रानीवाड़ा - 9024202921, 9414565658
जालोर - 9024597505, 9950539531
बालोतरा- 9414270771, 9413503100
जोधपुर - 9414145448, 7597525433
पाली - 9461343724, 02932282221
बाड़मेर - 7742093179, 9414342446
अहमदाबाद -09428729366,9429131066
सुरत - 0261-2369777,09825572768
डीसा - 9426428751
रायपुर- 09425515915

मुम्बई - 02266393598, 9702041008
भयंदर - 98190772061, 9029519779
पुणे - 09372220347, 9326960169
गोवा- 7709587648,9029519779
पाटण - 09824929551
भाभर - 09714682899
दियोदर -09925424968,09909466280
जयपुर - 9414048061
दिल्ली - 9811985292, 09311554601, 08860602160
लुधियाना - 9814036249
कानपुर - 9984211112
टेट्रोड़ा - 09724325325, 9724325311

बैंगलोर - 09449052168 09829101008
मद्रास - 9884173998
धानेरा - 9426037053, 9428679285
कोलकत्ता -9163302679
बीकानेर - 0151.2201021
हैदराबाद - 09849115851
पालनपुर - 09428459225
मेड़ता सिटी -9414119299
नंदग्राम - 7742093200
भीलवाड़ा - 9414113284, 9413357579
वृन्दावन - 09829014281

निराश्रित एवं अनाश्रित गोवंश के सेवार्थ

परम पूज्य

गोवत्स श्रीराधाकृष्णजी महाराज

के श्रीमुख से

''नानी बायी का मायरा''

(दिनांक 1 से 3 अप्रेल, 2012 तक)

-:आयोजक:-

गोसेवा समिति, बाड़मेर

शाखा- गोधाम पथमेड़ा।

सहयोग को आप सीधे ही निम्न में से किसी भी बैंक में ऑन लाईन जमा करवा सकते है।

Account Name
Shree Gopal Govardhan Goshala, Pathmeda

Bank's Name	: Account No
बैंक ऑफ बड़ौदा Bank of Baroda India's International Bank	29450100007739
भारतीय स्टेट बैंक State Bank of India With you- all the way Pure Banking. Nothing else.	31187795707
स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर State Bank of Bikaner and Jaipur The Bank with a vision	51055523971